



श्री 1008 महामंडलेकर
श्री स्वामी रामानंद
दासजी महाराज
श्री रामानंद दास अनक्षेत्र सेवा
ट्रस्ट, तपोवन आश्रम



स्व. पं. पू. 1008 श्री रामानन्द जी
तपोवन मंदिर, मोघ गाँव, सुलत

आपराधिक आरोपी को समाज में पुनः शामिल होने का संवैधानिक अधिकार: सुप्रीम कोर्ट



नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने बिलकिस बानो मामले के दोषियों को रिहाई विवाद पर सुनवाई के दौरान कहा कि आपराधिक मामले में आरोपी को समाज में पुनः शामिल होने का संवैधानिक अधिकार है। न्यायमूर्ति बी वी नागरत्ना और न्यायमूर्ति उज्ज्वल भूइया की पीठ ने 11 दोषियों को सजा में छूट देकर उन्हें रिहाई करने के गुजरात सरकार के फैसले को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए यह टिप्पणी की। पीठ ने कहा कि भारत के संविधान राष्ट्रपति और राज्यपालों को आपराधिक दंडों को क्षमा करने और माफ करने की अनुमति देने का अधिकार देता है।

पीठ ने इस मामले में तीसरे पक्ष द्वारा दायर जनहित याचिका पर सुनवाई के दौरान यह टिप्पणी की। इस पक्ष ने दलील दी कि माफ़ी आवेदन दायर करने का अधिकार वैधानिक है। ऐसी याचिकाओं पर कानून और प्रत्येक मामले के तथ्यों के गुण दोष के आधार पर विचार किया जाना चाहिए। इस पर न्यायमूर्ति नागरत्ना ने कहा, यदि आप देखें तो किसी आरोपी को समाज में पुनः शामिल करना भी एक संवैधानिक अधिकार है। वैधानिक अधिकार होने के अलावा सजा में छूट का उल्लेख 161, 72 (संविधान के अनुच्छेद) में किया गया है।

शोध अदालत इस मामले की आगली सुनवाई 17 अगस्त को अपराधन दो बजे करेगी। गुजरात में वर्ष 2002 में बिलकिस बानो के साथ सामूहिक बलात्कार और उनके परिवार के कई लोगों की हत्या कर दी गई थी। इस मामले में पिछले साल 11 दोषियों को सजा में छूट के साथ रिहा कर दिया गया था।

बिलकिस बानो ने इस फैसले को चुनौती दी थी। उनके अलावा और भी कई लोगों ने जनहित याचिका दायर की थीं।

'इंडिया' के लिए पश्चिम बंगाल में एकजुटता जरूरी, लेकिन टीएमसी की वाम दलों से दूरी; ममता भी खामोश

पश्चिम बंगाल कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता ने स्वीकार किया कि गठबंधन के घटक दलों में कुछ दिक्कतें हैं, पर चुनाव में अभी वक्त है। हम आपस में चर्चा कर कोई न कोई रास्ता निकाल लेंगे।

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इवेलुसिव एलायंस को लेकर काफी सकारात्मक हैं। इंडिया गठबंधन की बैठकों में वह बड़ चढ़कर हिस्सा ले रही हैं, पर बंगाल में गठबंधन को लेकर वह खामोश हैं। वर्ष 2024 के चुनाव में तुणमूल कांग्रेस वाम दलों के साथ खड़ी नहीं होना चाहती। इसलिए, गठबंधन दूसरे विकल्पों पर भी विचार कर रही है।



ममता बनर्जी ने स्थानीय निकाय चुनाव में बेहतर प्रदर्शन किया है, पर इसके बावजूद लोकसभा चुनाव उनके लिए बड़ी चुनौती है। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने अपने वोट प्रतिशत में करीब 23 फीसदी की वृद्धि करते हुए 18 सीटों पर जीत दर्ज की थी।

घटक दल मिलकर लड़ें
पिछले लोकसभा चुनाव में तुणमूल कांग्रेस ने 22 सीटें जीती थीं और 19 सीट पर दूसरे स्थान पर रही थीं। वहीं, कांग्रेस ने दो सीटें जीतीं और एक सीट पर दूसरे नंबर पर रही। पार्टी के एक नेता ने कहा कि इंडिया के घटकदल एकजुट होकर चुनाव लड़ते हैं, तो तस्वीर बदल सकती है। क्योंकि, 2014 के चुनाव में तुणमूल कांग्रेस को 34 सीटें मिली थीं। हम सभी को मिलकर इस लक्ष्य को फिर हासिल करना है।

दोस्ताना मुकाबले का फॉर्मूला संभव
पश्चिम बंगाल में तुणमूल कांग्रेस, कांग्रेस और वाम दल आपस में दोस्ताना मुकाबले के फॉर्मूले पर भी विचार कर रहे हैं। ऐसा होता है कि तीनों पार्टियाँ आपस में तालमेल कर एक-दूसरे के खिलाफ डमी उम्मीदवार उतार सकते हैं। इसके साथ यह विकल्प भी खुला है कि तुणमूल कांग्रेस और कांग्रेस आपस में समझौता करें। बाद में कांग्रेस अपने हिस्से में आई सीट से कुछ सीटें वाम दलों को दे दे। पार्टी के एक नेता के मुताबिक, यह सिर्फ एक विकल्प है। इंडिया गठबंधन में अभी इस मुद्दे पर कोई औपचारिक चर्चा नहीं हुई है।

गहलोट सरकार ने किए 17 आरएस के तबादले

जयपुर। राजस्थान में एक बार फिर ब्यूरोक्रेसी में फेरबदल किया है। 17 आरएस अफसरों के तबादले किए गए हैं। कार्मिक विभाग ने देर रात आदेश जारी कर दिए। अधिकतर तबादले रिक्त स्थानों को भरने के लिए किए गए हैं। कार्मिक विभाग की ओर से जारी आदेश के अनुसार 17 आरएस अधिकारियों को फील्ड में लगाया गया है। जबकि दो आरएस को एपीओ किया गया। ट्रांसफर होने वाले ज्यादातर अधिकारियों को नव गठित जिलों में अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट नियुक्त किए गए हैं।

विकास न्यास श्रीगंगानगर, दीपेंद्र सिंह राठौड़ को अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट प्रतापगढ़, कपूर शंकर मान को अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं अतिरिक्त मजिस्ट्रेट श्रीगंगानगर अनुपगढ़ होता है।

2 आरएस एपीओ
जबकि बालकृष्ण तिवारी को अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्रीगंगानगर धौलपुर, चंदन दुबे को अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्रीगंगानगर शाहपुरा, राकेश कुमार गुप्ता को अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्रीगंगानगर ब्यावर, कालूराम खोड़ को अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट फरलेदी, रवि विजय को अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्रीगंगानगर दुदू, चंदन शेखर भंडारी को अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट सांचौर, राजकुमार कर्खा को अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट दौसा, दिनेश चंद्र धाकड़ को अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट केकड़ी, दुर्गाशंकर मीणा को अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट सलूबर लगाया गया है। जबकि नवीन यादव और अशोक सागवान को एपीओ किया गया है।

दिनेश शर्मा एडीएम जयपुर
ग्रामीण-कार्मिक विभाग के आदेश के अनुसार दिनेश कुमार शर्मा को अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट जयपुर, ग्रामीण, नरेश कुमार यादव को अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्रीगंगानगर राजसमंद, बजरंग सिंह को अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट खेरखत, ओमप्रकाश पंचम को अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट जोधपुर ग्रामीण, अरविंद कुमार जाखड़ को अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्रीगंगानगर, कैलाश चंद को सचिव नगर

विकास न्यास श्रीगंगानगर, दीपेंद्र सिंह राठौड़ को अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट प्रतापगढ़, कपूर शंकर मान को अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं अतिरिक्त मजिस्ट्रेट श्रीगंगानगर अनुपगढ़ होता है।

नूंह में एक बार फिर निकलेगी हिंसा की वजह से अधूरी रह गई ब्रजमंडल यात्रा

तीएचपी बजरंग दल ने तारीख भी की तय

गुरुग्राम। विश्व हिंदू परिषद (विहिप) और बजरंग दल ने नूंह में 28 अगस्त को एक बार फिर से जलाभिषेक यात्रा शुरू करने की घोषणा की है। इस यात्रा को 31 जुलाई को हिंदू-मुसलमानों के बीच हिंसा भड़कने के बाद बीच में ही छोड़ दिया गया था। बता दें कि, हरियाणा के मुस्लिम बहुल नूंह जिले में 31 जुलाई को विश्व हिंदू परिषद (विहिप) की ब्रज मंडल शोभा यात्रा पर भीड़ द्वारा हमला करने के बाद भड़की साम्प्रदायिक हिंसा में दो होम गार्ड और एक इमाम समेत छह लोगों की मौत हो गई थी और 88 लोग घायल हो गए। गुरुग्राम में भी हिट्युट हिंसक घटनाएं दर्ज की गई थीं। नूंह के डिप्टी कमिश्नर धीरेंद्र खड्गदा और नूंह के पुलिस अधीक्षक नरेंद्र बिजौरिया ने कहा कि उन्हें इस यात्रा के लिए अभी तक कोई आवेदन नहीं मिला है। अधिकारियों ने कहा कि प्रशासन यात्रा की अनुमति देने पर निर्णय लेने से पहले यात्रा की



तारीख के करीब की स्थिति को देखेगा। नूंह हिंसा के बाद एक्शन में हरियाणा पुलिस, रोहिंया शरणार्थियों के लिए बनाया ये बड़ा प्लान-विहिप, गुरुग्राम के अध्यक्ष अजीत सिंह ने कहा कि 31 जुलाई को यात्रा में 3,500 से अधिक लोग शामिल हुए थे, लेकिन 28 अगस्त को इससे कहीं अधिक लोग शामिल होंगे। -हमने अपनी ताकत और उपस्थिति दिखाने के लिए हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और गुजरात से अपने कार्यकर्ताओं को यात्रा का हिस्सा बनने

के लिए आमंत्रित किया है। हमारा हिंसा पैदा करने का कोई इरादा नहीं है लेकिन इस बार हम पूरी तरह तैयार रहेंगे। नासिर-जुनेद की हत्या से नाराज थे कुछ मुसलमान-नूंह मेवात क्षेत्र का हिस्सा है जो हरियाणा और राजस्थान दोनों राज्यों के कुछ हिस्सों तक फैला हुआ है। हालांकि, पिछले तीन सालों से यहां हर साल यह यात्रा निकाली जा रही है, लेकिन इस वर्ष की यात्रा अलग थी। मेवात क्षेत्र में आमतौर पर साम्प्रदायिक झड़पें नहीं होती हैं, लेकिन इस बार यहां रहने वाले कुछ मुसलमान राजस्थान के दो मुस्लिम पशु व्यापारियों नासिर-जुनेद की फरवरी में पीट-पीटकर हत्या करने के आरोपी गौरक्षक मोनु मानेसर को फकड़ने में प्रशासन की उदासीनता से गुस्से में थे। मोनु मानेसर ने खुद यात्रा से पहले सोशल मीडिया पर वीडियो पोस्ट किए थे, जिससे लग रहा था कि वह भी इस यात्रा में मौजूद रहेगा।

उदयपुर में 18वीं विशाल कावड़ यात्रा 21 अगस्त को

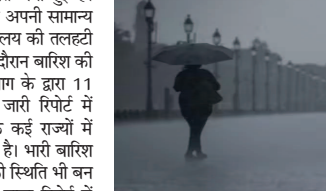
उदयपुर। राजस्थान में झोलों की नगरी उदयपुर में शिव महोत्सव समिति की ओर से आगामी 21 अगस्त को गंगु कुंड से उभयेश्वर महोत्सव तक की निकाली जाने वाली विशाल 18वीं कावड़ यात्रा में 10 हजार से अधिक कावड़ियों के भाग लेने की संभावना है। कावड़ यात्रा में आमजन की भागीदारी हो इसके लिए गुरुवार को गंगा के चौथे पाये गंगु कुंड प्रांगण में सात दिवसीय समारोह एवं पोस्टर का विमोचन किया गया। अच्छी की वर्षा लेकर 2006 में 50 मित्रों के साथ शुरू इस कावड़ यात्रा में इस वर्ष 10 हजार कावड़ियों उभयेश्वर महोत्सव का अभिषेक करेगी। सात दिवसीय समारोह संयोजक एडवोकेट रामकृष्ण



शर्मा ने बताया कि सात दिवसीय समारोह का आगाज शनिवार को होगा जिसके तहत महादेव धर्मोत्सव समिति की ओर से गंगु कुण्ड पर दो दिवसीय का आगाज शनिवार को पाठ की स्थापना की जायेगी।

15 अगस्त तक होगी झमाझम बारिश

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश और बिहार में एक चक्रवाती परिसंचरण की स्थिति बनी हुई है। इसके अलावा मॉनसून टर्फ भी अपनी सामान्य स्थिति में है। इसके कारण हिमालय की तलहटी में अगले चार से पांच दिनों के दौरान बारिश की स्थिति बनी रहेगी। मौसम विभाग के द्वारा 11 अगस्त को सुबह आठ बजे जारी रिपोर्ट में अगले पांच दिनों तक देश के कई राज्यों में बारिश की भविष्यवाणी की गई है। भारी बारिश के कारण कई इलाकों में बाढ़ की स्थिति भी बन चुकी है। आईएमडी ने अपनी ताजा रिपोर्ट में कहा है, उत्तराखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश में 15 अगस्त तक भारी बारिश हो सकती है। हिमचाल प्रदेश में भी इस दौरान अलग-अलग जगहों पर भारी बारिश के आसार हैं। पंजाब और हरियाणा में 13 अगस्त तक बादल बरसने की संभावना है। इन इलाकों में अगले 6 दिनों के दौरान आसमान में बादल छाए रहेंगे और बारिश होती रहेगी। आईएमडी ने आगे कहा, बिहार, पश्चिम बंगाल और सिक्किम में भी 11 से 15 अगस्त



तक अलग-अलग जगहों पर हल्की से मध्यम बारिश हो सकती है। उत्तर बिहार में 13 अगस्त तक भारी बारिश की संभावना है। सिक्किम में 11 और 12 अगस्त को खूब बारिश हो सकती है। मौसम विभाग के मुताबिक, अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा में अगले तीन दिनों के दौरान भारी बारिश होने की प्रबल संभावना है। देश के अन्य हिस्सों में भी अगले सात दिनों के



दौरान अलग-अलग जगहों पर बारिश हो सकती है। दिल्ली के कुछ हिस्सों में हल्की बारिश दिल्ली के कई इलाकों में शुरूवार को भी हल्की बारिश हुई। राष्ट्रीय राजधानी से सटे गाजियाबाद और नोएडा के कुछ हिस्सों में भी बारिश हुई। मौसम विभाग के मुताबिक अगले दो दिनों में राष्ट्रीय राजधानी में आमतौर पर बादल छाए रहने और हल्की बारिश होने की

संभावना है। आईएमडी ने एक बुलेटिन जारी कर कहा कि दिल्ली में अधिकतम तापमान 35.2 डिग्री सेल्सियस रहा, जो इस मौसम के औसत तापमान से एक डिग्री अधिक है, जबकि शहर का न्यूनतम तापमान 27 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। उत्तराखंड में बारिश का प्रकोप जारी, दो लोगों की मौत-उत्तराखंड में भारी बारिश का प्रकोप गुरुवार को भी जारी रहा और विभिन्न स्थानों पर जलभराव और बाढ़ जैसे हालात बन गए जबकि वर्षा संबंधी घटनाओं में आज दो व्यक्तियों की मौत हो गयी और दो अन्य घायल हुए हैं। मुसलाधार बारिश के चलते उफान पर चल रहे नदी-नालों का पानी रिहायशी इलाकों में घुस गया, जिसके बाद कई स्थानों पर लोगों को बाहर निकाला गया। पुलिस ने बताया कि त्रिभुंगेश के पास चौरासी कुटिया क्षेत्र में एक दीवार ढह जाने से उसके मलबे में दक्कर एक व्यक्ति की मृत्यु हो गयी और एक अन्य घायल हो गया।

47 साल बाद शुरू हुआ 'लूना 25' का सफर, चांद पर भारत का पड़ोसी होगा रूस; पहुंचने में चंद्रयान-3 से लगी होड़

नई दिल्ली। रूस ने शुक्रवार 11 अगस्त को अपने स्थानीय समय तड़के 2.11 बजे वोस्तोनी कोस्मोड्रोम से लूना-25 लैंडर को लॉन्चिंग की। 47 साल बाद रूस चंद्रमा के लिए अपना पहला अंतरिक्ष यान रवाना कर चुका है। इससे पहले भारत ने चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग की उपलब्धि हासिल करने की कोशिश में चंद्रयान-3 को चंद्रमा पर भेजा है। चंद्रमा के लिए रवाना किए गए दोनों मिशन दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग करेंगे। इस तरह भारत और रूस चांद पर एक दूसरे के पड़ोसी होने वाले हैं। ऐसा बताया जा रहा है कि लूना 25 चंद्रमा की सतह पर चंद्रयान-3 से पहले ही लैंड करेगा। बता दें रूस 1976 के बाद पहली बार

चंद्रमा पर अपने 'लूना-25' यान को भेज रहा है। इस यान का प्रक्षेपण यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी की मदद के बिना किया गया है, जिसने यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के बाद रूसों के साथ अपना सहयोग समाप्त कर दिया है। खबरों के मुताबिक, रूसी अंतरिक्ष यान के 23 अगस्त को चंद्रमा पहुंचने की संभावना है। यह वही तारीख है, जब भारत की तरफ से 14 जुलाई को प्रक्षेपित किए गए चंद्रयान-3 के चंद्रमा की सतह पर कदम रखने की उम्मीद है। दोनों ही देशों ने अपने-अपने यान को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतारने का लक्ष्य निर्धारित किया है, जहां अभी तक कोई भी यान सॉफ्ट लैंडिंग करने में सफल नहीं हो सका है।



लैंडिंग कर पाए हैं। सब कुछ ठीक रहा तो रूस का लूना 25 और चंद्रयान-3 को दक्षिणी ध्रुव पर मौजूदगी से दोनों देश चांद पर एक दूसरे के पड़ोसी हो जाएंगे। रूस की अंतरिक्ष एजेंसी रोस्कोस्मोस के प्रमुख यूरी बोरीसोव के मुताबिक, लूना का लैंड 21 अगस्त को चंद्रमा की सतह पर उतर सकता है। पहले इसके लैंडिंग की तारीख 23 अगस्त बताई जा रही थी। इंटरफेक्स के मुताबिक, बोरीसोव ने लॉन्च के बाद वोस्तोनी कोस्मोड्रोम में कार्यकर्ताओं से कहा, अब हम 21 तारीख का इंतजार करेंगे। मुझे उम्मीद है कि चंद्रमा पर बेहद सटीक सॉफ्ट लैंडिंग होगी। लूना-25, लगभग एक छोटी कार के आकार का है, जो चंद्रमा के दक्षिणी

ध्रुव पर एक वर्ष तक काम करने के लक्ष्य से बनाया गया है। लूना-25 मिशन की सफलता महत्वपूर्ण महत्व रखती है, क्योंकि रूसी सरकार का दावा है कि यूक्रेन संघर्ष के कारण पश्चिमी देशों द्वारा लगाए गए प्रतिबंध से रूसी अर्थव्यवस्था को गंभीर नुकसान पहुंचा है। ऐसे में पहली बार रूस ने अपने दम पर इस अंतरिक्ष मिशन को लॉन्च किया है। फरवरी 2022 में यूक्रेन से युद्ध के परिणामस्वरूप अंतरिक्ष अंतरिक्ष स्टेशन में रूस की भागीदारी खत्म हो गई थी, जिसके कारण पश्चिमी देशों के साथ रूस के अंतरिक्ष-संबंधी सहयोग में काफी कमी आई।

भाजपा नेता की घर के सामने गोली मारकर हत्या, आरोपी फरार

मुरादाबाद। यूपी में बीजेपी नेता की निर्मम हत्या की गई है। पार्श्वनाथ हाउसिंग सोसायटी का परिसर गोलियों की तड़तड़हट से गुंज उठा। शुकुवार को बाइक सवार तीन हमलावरों ने भाजपा नेता अनुराज चौधरी पर ताबड़तोड़ कई राउंड गोलियां चलाकर फरार हो गए। घायल अनुराज चौधरी को तुरंत निजी अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने अनुराज को मृत घोषित कर दिया। भाजपा किसान मोर्चा से जुड़े और भाजपा के कद्दावर नेताओं और मंत्रियों के करीबी अनुराज चौधरी की मौत की खबर के बाद तमाम पुलिस अधिकारी घटनास्थल पर पहुंचे। पुलिस आरोपियों की तलाश में जुट गई है। 28 साल के अनुराज चौधरी संभव जनपद के ग्राम एचोडा कांभो के रहने वाले थे और भारतीय जनता पार्टी के किसान मोर्चे से जुड़े हुए थे। असमोली की ब्लॉक प्रमुख बनी महिला के बेटे अतिकेत से अनुराज की युवाव के बाद काफी गर्मा गर्मी हो गई थी। अनुराज चौधरी मौजूदा ब्लॉक प्रमुख के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव भी लाने का ऐलान कर चुके थे, इसके बाद से ही दोनों में और ज्यादा तनावनी चल रही थी। अनुराज चौधरी भारतीय जनता पार्टी के मंत्री और नेताओं के साथ अक्सर नजर आते थे। मृतक अनुराज चौधरी को भाजपा के कद्दावर नेता स्वतंत्र देव सिंह का करीबी भी बताया जा रहा है। अनुराज ने संभव पुलिस को अपनी जान का खतरा बताया था, तब भाजपा के बड़े नेताओं से संबंधों के चलते अनुराज चौधरी को सुरक्षा के लिए गनर भी उपलब्ध कराए गए थे, जो 24 घंटे अनुराज चौधरी की सुरक्षा में तैनात रहते थे। असमोली की मौजूदा अध्यक्ष द्वारा सत्ता पक्ष के लोगों के समर्थन में आ जाने के बाद से यह माना गया कि अनुराज चौधरी का अपने विरोधियों से समझौता हो गया है उसी के मध्य अनुराज चौधरी की सुरक्षा भी वापस ले ली गई थी लेकिन अपने प्लेट से निकलकर बाहर टहल रहे अनुराज चौधरी के ऊपर तीन बदमाशों ने हमला कर गोलियां मार दी जिसमें अनुराज की मौत हो गई।

जवान देते रहे चेतावनी फिर भी नहीं रुका पाकिस्तानी घुसपैटिया, पंजाब के तरनतारन में बाँडर क्रॉस कर रहे शख्स को बीएसएफ ने किया ढेर

चंडीगढ़। पंजाब के तरनतारन जिले में अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास शुकुवार को एक पाकिस्तानी घुसपैटिये को मार गिराया गया। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। अधिकारी ने कहा कि सीमा सुरक्षा बल के जवानों ने सुबह थैकला गांव के पास एक व्यक्ति की संधि हरकत देखी। अधिकारी ने बताया कि शुकुवार को पंजाब के तरनतारन जिले में अंतरराष्ट्रीय सीमा (आईबी) पर सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने एक पाकिस्तानी घुसपैटिये को मार गिराया। बीएसएफ के जवानों ने तरन तारन जिले के अंतर्गत थैकला गांव के पास अंतरराष्ट्रीय सीमा पर एक व्यक्ति की संधि गतिविधि देखी। सैनिकों ने घुसपैटिये को चुनौती दी लेकिन वह सीमा बाड़ की ओर आगे बढ़ता रहा। अधिकारी ने कहा, आसन्न खतरों को भांपते हुए और आगे के दुस्साहस को रोकने के लिए, बीएसएफ कर्मियों ने गोलीबारी की, जिससे व्यक्ति की मौत पर ही मौत हो गई। इससे पहले जुलाई में, जम्मू-कश्मीर में अंतरराष्ट्रीय सीमा पर घुसपैट को एक बड़ी कोशिश को बीएसएफ जवानों ने नाकाम कर दिया था, जिसमें एक पाकिस्तानी घुसपैटिया मारा गया था। बीएसएफ के अनुसार, बार-बार दी गई चेतावनियों को नजरअंदाज करने और अरनिया सेक्टर में जबोवाल सीमा चौकी के पास सीमा बाड़ को पार कर करने में कामयाब होने के बाद भागने की कोशिश करने के बाद सतर्क सैनिकों ने घुसपैटिये को मार गिराया।

एनआईए को बेंगलुरु में अवैध रूप से रह रहे 24 बांग्लादेशी अप्रवासी मिले

बेंगलुरु। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने तलाशी अभियान के दौरान बेंगलुरु में अवैध रूप से रह रहे 24 बांग्लादेशी नागरिकों का पता लगाकर पुलिस को सौंप दिया। पुलिस सूत्रों ने दावा किया कि एनआईए ने शहर के बेलदूर इलाके में एक तलाशी अभियान के दौरान तीन अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों - खलील चपरसी, अब्दुल खादिर और मोहम्मद जहीद को ढूँढ लिया था। प्रारंभिक जांच से पता चला है कि अप्रवासी, जो वर्तमान में क्षेत्राधिकार बेलदूर पुलिस की हिरासत में हैं, 2011 से देश में अवैध रूप से रह रहे थे। वे एक दलाल की मदद से 20 हजार रुपये देकर देश में दाखिल हुए। अवैध अप्रवासी आधार कार्ड, राशन कार्ड और अन्य सरकारी पत्राचार पत्र प्राप्त करने में भी कामयाब रहे। स्थानीय पुलिस ने इस संबंध में विदेशी अधिनियम की धारा 14 (सी), 14 (ए) और पासपोर्ट अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज की और मामले की जांच कर रही है।

सुकेश ने प्रेम पत्र में जैकलीन को जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं और कहा भगवान तुम्हें आशीर्वाद दें मेरी बेबी गर्ल

नई दिल्ली। दिल्ली की मंडोली जेल में बंद टग सुकेश चंद्रशेखर ने एक और प्रेम पत्र में शुकुवार को बॉलीवुड अभिनेत्री जैकलीन फर्नांडीज को उनके जन्मदिन पर शुभकामनाएं दीं और भविष्य में साथ में जश्न मनाने का वादा किया। चंद्रशेखर ने अभिनेत्री को बेबी गर्ल कहकर संबोधित करते हुए लिखा कि आपको जन्मदिन की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। भगवान तुम्हें आशीर्वाद दें मेरी बेबी गर्ल। तुम्हारा जन्मदिन मेरी जिंदगी में हर साल का सबसे खुशी का दिन होता है। वास्तव में यह मेरे लिए मेरे अपने जन्मदिन से भी अधिक मानने रहता है। आप हर गुजरते दिन के साथ और भी अधिक सुंदर और युवा होती जा रही हैं। मैं आपको बेहद याद कर रहा हूँ, आपको कोई अंदाजा नहीं है। यह पत्र उनके वकील अनंत मलिक के माध्यम से शुकुवार सुबह जारी किया गया। चंद्रशेखर ने लिखा कि मुझे तुम्हें विदेशी फूल उपहार देने और सबसे महत्वपूर्ण हमारी जादुई झण्पी और कैंस साझा करने के क्षण याद आते हैं। बेबी में वास्तव में आशा करता हूँ कि तुम्हें मेरा जन्मदिन का उपहार पसंद आएगा। उसने लिखा कि मैं समझता हूँ कि जानवरों के लिए आश्रय बनाने के आपके सपने को साकार करने से ज्यादा खुशी सोना, हीरो या मोती जैसी कोई भी भौतिक संपत्ति तुम्हें नहीं ला सकती है।

दिल्ली के स्कूली छात्रों को कक्षाओं में मोबाइल का इस्तेमाल करने की अनुमति नहीं : शिक्षा निदेशालय

नयी दिल्ली। शिक्षा निदेशालय (डीओई) ने बृहस्पतिवार को कहा कि दिल्ली के सरकारी व निजी स्कूलों की कक्षाओं में छात्रों के मोबाइल फोन का इस्तेमाल करने पर सख्त पाबंदी है। शिक्षकों और अन्य कर्मचारियों को कक्षाओं, खेल के मैदानों, प्रयोगशालाओं और पुस्तकालयों जैसे स्थानों पर मोबाइल फोन का उपयोग करने से बचने के लिए भी कहा गया है। डीओई ने एक परिपत्र में कहा, फ़नाता-पिता को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके बच्चे स्कूल परिसर में मोबाइल फोन न लाएं। यदि छात्र स्कूल में मोबाइल फोन लाते हैं, तो स्कूल प्राधिकरण को उन्हें लौकर में रखने की व्यवस्था करनी चाहिए और छुट्टी होने के बाद छात्रों को मोबाइल फोन वापस लौटा देना चाहिए। परिपत्र में स्कूल अधिकारियों को हेल्पलाइन नंबर उपलब्ध कराने के लिए कहा गया है, जहां छात्र व अभिभावक आपात स्थिति में कॉल कर सकें। यह परामर्श दिल्ली के सभी सरकारी और निजी स्कूलों के लिए जारी किया गया है।

शिवसेना विधायक के बेटे पर मारपीट और अपहरण का मामला दर्ज, तीन लोग गिरफ्तार

मुंबई। वित्तीय विवाद को लेकर एक संगीत कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीओओ) के साथ मारपीट और अपहरण में कथित संलिप्तता के लिए पुलिस ने तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इस मामले में शिवसेना के एक विधायक के बेटे पर भी मामला दर्ज किया है। एक अधिकारी ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। पुलिस के मुताबिक, संगीत कंपनी के सीईओ 38 वर्षीय राजकुमार सिंह को गोरगांव उपनगर में उनके कार्यालय से अंधार शाम अगवा करने के बाद बदमाशों के एक समूह ने उन पर हमला किया था। पुलिस ने बताया कि घटना के संबंध में शिवसेना विधायक प्रकाश सुर्वे के बेटे राज सुर्वे समेत 16 अन्य लोगों के खिलाफ वनराई पुलिस थानों में भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 364ए (फ़िरोती के लिए अह्राण), 452 (चोरी) के तहत मुद्दे दर्ज किए गए हैं। धारा 323 (स्वच्छ से चोट पहुंचाना), 504 (नियम तोड़ने के इरादे से किया गया अपमान) और 506 (आपराधिक मर्णा) के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई है।

शाह ने लोकसभा में पेश किया ऐतिहासिक बिल दाऊद जैसे भगौड़े अपराधियों पर चलेगा केस...सुनाई जाएगी सजा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत से भागकर अपराधी चले दुनिया के किसी भी कोने छिप जाए, अगर गायब रहने पर भी उन्हें देश में सजा होगी। इसके लिए एक नया कानून आ रहा है। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि हमारे नए कानून में प्रावधान है कि दाऊद या कोई भी भगौड़ दुनिया के किसी भी कोने में हो, उसकी गैर-मौजूदगी में भी कोर्ट में सुनवाई होगी और सजा सुनाई जाएगी। केंद्रीय मंत्री शाह ने कहा कि हमारी सरकार ने एक बहुत ऐतिहासिक फैसला किया है, यह फैसला है अनुपस्थिति में ट्रायल का। कई मामलों में दाऊद इब्राहिम वांटेड है। वहां देश छोड़कर भाग गया, लेकिन उस पर अदालत का ट्रायल नहीं चल सकता। आज हमारी सरकार ने तय किया है कि सेशन कोर्ट के जज उचित प्रक्रिया के बाद जिस अपराधी को भगौड़ घोषित करते हैं, उसकी गैर-मौजूदगी में ट्रायल होगा और उस सजा भी सुनाई जाएगी।



केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने कहा कि किसी भी आरोपी को अगर सजा के खिलाफ अपील करनी है, तब उस आरोपी को भारत में आना होगा। गृहमंत्री शाह ने कहा कि हम तीन नए विधेयक लाए हैं। आईपीसी 1860, सीआरपीसी 1898 और इंडियन एक्टिविटीज एक्ट 1872, ये तीनों अंग्रेजों द्वारा लाए गए कानून थे। शाह ने कहा कि '1860 से 2023 तक देश को आपराधिक न्याय प्रणाली अंग्रेजों द्वारा बनाए गए कानूनों के अनुसार काम करती रही। अब तीन कानून बदल जायेंगे और आपराधिक न्याय प्रणाली में बड़ा बदलाव होगा। शाह ने कहा कि 'अब हम लोकसभा में भारतीय न्याय संहिता विधेयक-2023, भारतीय साक्ष्य विधेयक-

2023 और भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता विधेयक ला रहे हैं। इसका उद्देश्य सभी को न्याय देना है। मैं सदन को आश्चर्य करता हूँ इससे लोगों को न्याय मिलने में आसानी होगी। इन्हें स्टैंडिंग कमेटी में भेजा जा रहा है। आम आदमी इस नए कानून के केंद्र में होगा। शाह ने कहा कि 2019 में ही पीएम मोदी ने कहा था कि अंग्रेजों के बनाए गए कानूनों को आज के हिसाब से बनाना चाहिए। इस पर केंद्रीय मंत्री शाह ने कहा कि इसके लिए व्यापक चर्चा की गई। सभी हाईकोर्ट, यूनिवर्सिटी, सुप्रीम कोर्ट, आईएएस, आईपीएस, राज्यपाल, मुख्यमंत्री,

राहुल के पास लड़कियों की कमी नहीं, 50 साल की महिला को क्यों पलाइंग किस देंग: नीतू सिंह

- बीजेपी नेताओं ने नीतू सिंह के बयान की भर्त्सना की

पटना(एजेंसी)। संसद में अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान कांग्रेस सांसद राहुल गांधी का केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी को कथित रूप से पलाइंग किस देने के विवाद में अब नया विवाद जुड़ गया है। बिहार से कांग्रेस विधायक नीतू सिंह ने शर्मनाक बयान देते हुए कहा है कि राहुल गांधी के पास पलाइंग किस देने के लिए लड़कियों की कमी नहीं है। अगर उन्हें किसी को पलाइंग किस देना होगा तो वह स्मृति ईरानी जैसी 50 साल की किसी लड़की को क्यों देंगे? दरअसल, संसद में राहुल गांधी ने बुरे आरोपों को लेकर नवादा जिले की हिंदुआ सीट से कांग्रेस विधायक नीतू सिंह से राय मांगी थी। इस दौरान बीजेपी सरकार में केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी को आड़े हाथों लिया और कहा कि हमारे राहुल जी के पास लड़कियों की कमी नहीं है। अगर उनको पलाइंग किस देना होगा तो किसी लड़की को देंगे। 50 साल के बूढ़े को क्या पलाइंग किस देना। यह सब आरोप निराधार हैं।



नीताओं ने नीतू सिंह के बयान की भर्त्सना की है। बीजेपी प्रवक्ता गौरव भाटिया ने नीतू सिंह के बयान की निंदा करते हुए उसे शर्मनाक बताया है। बीजेपी के एक अन्य प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने भी नीतू सिंह के बयान की आलोचना करते हुए कहा है कि महिला विरोधी कांग्रेस राहुल गांधी की कथित गलत हरकतों पर उनका बचाव करने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। आरोप है कि बुधवार को चर्चा में हिस्सा लेने के बाद जब राहुल गांधी सदन से बाहर निकल रहे थे, तब सत्तापक्ष पक्ष के कुछ सदस्यों की टीका-टिप्पणी पर कांग्रेस सांसद ने

पलाइंग किस की भाव-भंगिमा प्रदर्शित की। हालांकि, राहुल के रिएक्शन का जो क्षण कैमरे में कैद नहीं हुआ है। केंद्रीय महिला और बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर सदन में पलाइंग किस की भाव-भंगिमा प्रदर्शित करते हुए महिला सांसदों के प्रति अभद्र व्यवहार करने का आरोप लगाया। ईरानी ने राहुल गांधी को महिलाओं से दूर रखने वाला शख्स भी बताया। संसद में भाषण के दौरान केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने राहुल गांधी पर निशाना साधा और कहा, सिर्फ एक महिला विरोधी व्यक्ति ही संसद में महिला सांसदों को पलाइंग किस दे सकता है। ऐसा उदाहरण पहले कभी नहीं देखा गया। इससे पता चलता है कि वह महिलाओं को लेकर क्या सोचते हैं। यह अभद्रता है। बाद में भारतीय जनता पार्टी की महिला सांसदों ने लोकसभा अध्यक्ष ओम प्रकाश से मुलाकात की और कैबल के ब्यान्नाड से लोकसभा सदस्य के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग की। हस्ताक्षर करने वाली सभी महिला बीजेपी सांसद स्पीकर कक्ष में पहुंची थीं।

पीएम मोदी ने ऐसा कुछ नहीं कहा...जो मणिपुर को भरसा देता : नीतीश कुमार

पटना। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बीजेपी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर फिर हमला किया है। उन्होंने कहा कि वे लोग सिर्फ प्रचार करते हैं न कि कोई काम करते हैं। साथ ही नीतीश कुमार ने कहा कि घबर घबराव चलता है और प्रधानमंत्री बाहर घूमते रहते हैं। नीतीश ने कहा कि सदन में जब अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा हो रही थी। इस दौरान पीएम ने ऐसा कुछ नहीं कहा जो मणिपुर को भरसा देता है। सीएम ने कहा कि मोदी सरकार इंडिया टुडे बनाने से परेशान है। यह हर जगह दिखने लगा है। देशहित और राज्य हित में इंडिया बनाया गया है। अब 2024 के चुनाव में बीजेपी बिहार से साफ हो जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज तमाम दल एकजुट हो रहे हैं, तब भाजपा इससे घबरा गई है। नीतीश ने कहा कि आज तक बिहार को विशेष राज्य का दर्जा नहीं दिया गया।

अंजू के बच्चों को अपनाऊंगा, भारत आकर दूंगा सभी जवाब: नसरुल्ला

- नसरुल्ला ने कहा कि वो अंजू से सच्चा प्यार करता है, टाइम पास नहीं कर रहा

अलवर (एजेंसी)। राजस्थान के भिवाड़ी से पाकिस्तान गई अंजू के प्रेमी नसरुल्ला ने कहा कि वह अंजू के दोनों बच्चों को अपनाएगा। वह अंजू के साथ भारत आकर सभी बच्चों को काम करेगा। एक साक्षात्कार में नसरुल्ला ने कहा कि वो अंजू से सच्चा प्यार करता है, टाइम पास नहीं कर रहा है। वो उनके लिए सबकुछ करने के लिए तैयार है। अभी दो महीने का बीजा एक्सपेंशन हुआ है। आगे उसके बाद की प्रक्रिया की जाएगी। बता दें कि भिवाड़ी की रहने वाली अंजू बीते 21 जुलाई को पाकिस्तान पहुंच गई थीं। वहां जाकर खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में रहने वाले नसरुल्ला से अंजू ने निकाह कर लिया था। नसरुल्ला ने कहा कि साल 2019 में अंजू एक मार्केटिंग कंपनी में काम करती थीं। अंजू को फेसबुक चलाना नहीं आता था। इसी दौरान सोशल मीडिया के माध्यम से उसकी मुलाकात अंजू से हुई।

राज्यसभा सभापति से जब खरगे ने कहा...जल्दी माइक बंद मत करो साहब

नई दिल्ली (एजेंसी)। मॉनसून सत्र के आखिरी दिन शुकुवार को राज्यसभा में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने हाथ जोड़ लिए। दरअसल, सभापति धनखड़ को पद पर शुकुवार को एक साल हुए हैं। सदन के नेता ने बधाई दी तब खरगे ने कहा कि कहते तब हम सभी मिलकर दो शब्द कह सकते थे लेकिन ये लोग बौर बात किए वन-वे काम करते हैं। इसके बाद खरगे ने हाथ जोड़कर कहा, आपसे विनती है जल्दी माइक बंद मत करो साहब। यह देख सभापति धो हंस पड़े और उन्होंने हाथ जोड़ लिए।



संसदें करने मुद्दा राज्यसभा में उठया। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि शुकुवार को अंतिम दिन हैं, और इतने लोगों को सदन से संसदें किया गया और प्रिविलेज कमेटी को रोक दिया गया। 6 लोगों को किया गया। वहां पर अधीर रंजन चौधरी

30 खाप, किसान संगठनों नूंह हिंसा को लेकर किए प्रस्ताव पारित

-मोनू मानेसर और बजरंगी की गिरफ्तारी की डिमांड

गुरुग्राम। नूंह हिंसा के अहम किरदार बताए जा रहे मोनू मानेसर की गिरफ्तारी की डिमांड तेज हो गई है। किसान संगठनों और कई धर्मों के लोगों की महापंचायत हुई। इसमें नूंह हिंसा को लेकर कई प्रस्ताव पास किए गए। संयुक्त किसान मोर्चा के नेता सुरेश कोट की अगुआई में हुई महापंचायत में किसान, जिन, कैथर, करनाल, भिवानी और फतेहबाद जैसे जिलों के लोगों ने हिस्सा लिया। महापंचायत में नूंह में दुबारा शांति स्थापित करने को लेकर चर्चा की गई और भड़काऊ नारेबाजी, भाषण देने वालों को चेताया गया। महापंचायत में सर्वसम्मति से गौरक्षक मानेसर और बिट्टू बजरंगी की गिरफ्तारी की मांग भी शामिल है। आरोप है कि मोनू और बजरंगी ने ब्रजमंडल यात्रा में शामिल होने का ऐलान कर मुस्लिम समुदाय को चुनौती देकर अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल किया था। हालांकि, हिंसा के तुरंत बाद हिंसा के गृहमंत्री अनिल विज ने मोनू मानेसर को भूमिका को नकार दिया था। उन्होंने कहा था कि यह यात्रा हर साल की तरह शांतिपूर्वक निकल रही थी और अपमान इस पर हमला किया गया। इस साल फरवरी में भरतपुर निवासी पशु व्यापारी नासिर और जुनेद की गौतकरी के शक में हत्या कर दी गई। इस केस में मोनू मानेसर का नाम आने के बाद से मुस्लिम समुदाय में उसके खिलाफ आक्रोश था। खापों और किसानों की महापंचायत में यह प्रस्ताव पास हुआ कि भविष्य में यदि हिंसा होती है, तब सभी धर्मों के लोग खुद को दूर रखें। नूंह में हिंसा के बाद शांति, सद्भाव स्थापित करने के लिए समाज के हर वर्ग को प्रयास करना चाहिए। अफवाह फैलाने वाले और लोगों को धमकाने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग भी की गई। संयुक्त किसान मोर्चा के नेता कोट ने आरोप लगाया कि बीजेपी से जुड़े लोग दंगा भड़काने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि किसान संगठन माहौल को बिगाड़ने नहीं देंगे। उन्होंने कहा, बीजेपी से जुड़े संगठन, कथिततौर पर जुलूस निकाल रहे हैं और सरपंचों को आदेश निकालने को मजबूर कर रहे हैं कि मुस्लिम गांव छोड़ दें। हम इस तरह के लोगों के खिलाफ सख्त एक्शन की मांग करते हैं जो समाज का सद्भाव बिगाड़ रहे हैं।

अधीर रंजन चौधरी के निलंबन के खिलाफ इंडिया के सांसदों का मार्च



नयी दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा से कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी के निलंबन के खिलाफ विपक्षी दलों के इंडिया गठबंधन के सांसदों ने शुकुवार को लोकसभा की कार्यवाही का बहिष्कार कर संसद में डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा तक मार्च किया। राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा वे लोकतंत्र को दबाना चाहते हैं। इसकाण्य सभी दलों के लोग यहां विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। हम उनके गैरकानूनी काम के खिलाफ लड़ते रहने वाले हैं...लोकतंत्र को जिंदा रखने के लिए हम संसद के अंदर और बाहर हर जगह लड़ने वाले हैं।

बता दे कि अविश्वास प्रस्ताव पर लोकसभा में चर्चा के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बारे में अपशब्दों का

इस्तेमाल करने पर सदन में कांग्रेस के नेता चौधरी को सदन से निलंबित करते हुए उनका मामला सदन की प्रिविलेज कमेटी को भेज दिया गया है। सदन में केंद्रीय मंत्री प्रल्हाद जोशी द्वारा पेश किए गए प्रस्ताव को स्वीकार करने के बाद लोकसभा स्पीकर बिलाले ने चौधरी द्वारा सदन में लगातार किए जा रहे व्यवहार की जांच का मामला सदन की प्रिविलेज कमेटी को भेजते हुए कमेटी की रिपोर्ट आने तक उन्हें सदन से निलंबित करने की घोषणा कर दी। सदन में जब उनके निलंबन के लिए हम संसद के अंदर और बाहर हर जगह लड़ने वाले हैं।

बता दे कि अविश्वास प्रस्ताव पर लोकसभा में चर्चा के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बारे में अपशब्दों का

धरती के बाद...चांद पर भी एक-दूसरे के दोस्त बनेंगे भारत और रूस

-23 अगस्त को लूना-25 और चंद्रयान-3 की सॉफ्ट लैंडिंग

नई दिल्ली (एजेंसी)। रूस ने 11 अगस्त को अपने वोस्तोनी कॉस्मोड्रोम से लूना-25 लैंडर को लॉन्चिंग की। 47 साल बाद रूस चंद्रमा के लिए अपना पहला अंतरिक्ष यान रवाना कर चुका है। इसके पहले भारत ने चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग की उपलब्धि हासिल करने की कोशिश में चंद्रयान-3 को चंद्रमा पर भेजा है। चंद्रमा के लिए रवाना किए गए दोनों मिशन दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाले हैं। इस तरह भारत और रूस चांद पर एक दूसरे के पड़ोसी होने वाले हैं। ऐसा बताया जा रहा है कि लूना-25 चंद्रमा की सतह पर चंद्रयान-3 से पहले ही लैंड करेगा।

बता दें रूस 1976 के बाद पहली बार चंद्रमा पर अपने लूना-25 यान को भेज रहा है। इस यान का प्रक्षेपण यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी की मदद के बिना किया गया है, जिसमें यूक्रेन पर रूसी आक्रमण के बाद रूसों के साथ अपना सहयोग समाप्त कर दिया है। रिपोर्ट के मुताबिक रूसी अंतरिक्ष यान के 23 अगस्त को चंद्रमा पर पहुंचने की संभावना है। इसी तारीख को भारत का चंद्रयान-3 के चंद्रमा की सतह पर कदम रखने की उम्मीद है। दोनों ही देशों ने अपने-अपने यान को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतारने का लक्ष्य निर्धारित किया है, जहां अभी तक कोई भी यान सॉफ्ट लैंडिंग करने में सफल नहीं हो सका है। अभी तक सिर्फ तीन देश, अमेरिका, जापान और रूस ने चंद्रमा की सतह पर सफल लैंडिंग कर पाए हैं। सब कुछ ठीक रहा तब रूस का लूना-25 और चंद्रयान-3 की दक्षिणी ध्रुव पर मौजूदगी से दोनों देश चांद पर एक दूसरे के पड़ोसी हो जायेंगे।



रूस की अंतरिक्ष एजेंसी रोस्कोस्मोस के प्रमुख यूरी बोरीसोव के मुताबिक, लूना का लैंडर 21 अगस्त को चंद्रमा की सतह पर उतर सकता है। पहले इसके लैंडिंग की तारीख 23 अगस्त बताई गई थी। उन्होंने कहा कि मुझे उम्मीद है कि चंद्रमा पर बेहद सटीक सॉफ्ट लैंडिंग होगी। लूना-25, लगभग एक छठीं का किलो का आकार का है, जो चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर एक वर्ष तक काम करने के लक्ष्य से बनाया गया है। लूना-25 मिशन की सफलता महत्वपूर्ण महत्व रखती है, क्योंकि रूसी सरकार का दावा

निज्जर हत्या मामले में कनाडाई एजेंसियों ने खतरे में भारत का उल्लेख नहीं किया

- निज्जर के करीबी ने दी यह जानकारी

लंदन। अलगाववादी तत्वों ने कनाडा में हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के लिए भारत को जिम्मेदार ठहराया है, लेकिन निज्जर के एक करीबी ने कहा है कि कनाडाई कानून प्रवर्तन एजेंसियों ने उनके जीवन के संभावित खतरे के बारे में जानकारी देकर भारत का उल्लेख नहीं किया। खालिस्तानी समर्थक निज्जर को निशाना बनाए जाने से बचने के लिए स्थानांतरित होने और अपनी दिनचर्या बदलने की सलाह दी गई थी। निज्जर की हत्या के बाद से खालिस्तान समर्थक समूह कनाडा में भारत के राजनयिकों को निशाना बनने का पोस्टर अभियान चला रहे हैं। निज्जर की हत्या के कारणों की अभी जांच चल रही है। जबकि अलगाववादी तत्वों ने सरे शहर में 18 जून को निज्जर की हत्या के लिए नई दिल्ली को दोषी ठहराया है। सूत्र ने कहा कि निज्जर को इस साल कई मौकों पर कैनेडियन सिक्योरिटी इंटील्लिजेंस सर्विस या सीएसआईएस और रॉयल कैनेडियन माउंटेड पुलिस या आरसीएपीमी दोनों ने टेलीफोन पर बातचीत और फॉलो-अप ईमेल एक्सचेंज के दौरान जानकारी दी थी। निज्जर को स्थानांतरित होने और अपनी दिनचर्या बदलने की सलाह दी गई थी ताकि उसे आसानी से निशाना न बनाया जा सके। निज्जर ने ये जानकारी सूत्र को बताई थी। हालांकि, निज्जर और खालिस्तान समर्थक समूहों ने अनुमान लगाया कि खतरा भारत से था। भारत की राष्ट्रीय जांच एजेंसी या एनआईए ने उसे पकड़ने में मदद करने वाली जानकारी के लिए पिछले साल जुलाई में 10 लाख के पुरस्कार की घोषणा की थी। हालांकि, उनके खिलाफ किसी भी आरोप का कनाडाई अदालत में परीक्षण नहीं किया गया और एएसएफजे ने कहा है कि वह हिंसा का उपयोग नहीं करता है।

बिहार से खरीदी डिग्री से चीन में पढ़ाई.....नेपाल में जाकर गिरफ्तार

काठमांडू। शैक्षणिक प्रमाणपत्रों में फर्जीबाड़ी करने के आरोप में गुरुवार को एक नेपाली सांसद को गिरफ्तार किया गया। नेपाली कांग्रेस के सांसद सुनील कुमार शर्मा ने कथित तौर पर बिहार से उच्च माध्यमिक शैक्षणिक डिग्री खरीदी और इसका इस्तेमाल चीन में उच्च अध्ययन करने के लिए किया। मीडिया रिपोर्ट में पुलिस प्रवक्ता कुबेर कदायत के इवाले से बताया कि नेपाल पुलिस के केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीआईबी) की एक टीम ने नेपाल की सतारूद पार्टी के प्रतिनिधि सभा के सदस्य सुनील शर्मा को काठमांडू से गिरफ्तार किया है। सुनील शर्मा को नेपाली कांग्रेस में शेखर कोसराला गुट का करीबी माना जाता है और उनकी गिरफ्तारी ने सतारूद गठबंधन में हलचल मचा दी है। कुछ मेडिकल कॉलेजों और निजी कॉलेजों के मालिक सुनील शर्मा की गिरफ्तारी उस समय में हुई है, जब उन्होंने पिछले महीने एक छात्रों में जब्त किए गए 100 किलोग्राम सोने की कथित तस्करी पर गृह मंत्री नारायण काजी श्रेष्ठ और वित्त मंत्री प्रकाश शरण महत का इस्तीफा मांगा था। पिछले माह 18 जुलाई की रात को त्रिभुवन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के कस्टम से बिना पता चले लगभग 100 किलोग्राम सोने की तस्करी के संबंध में एक भारतीय और एक चीनी नागरिक सहित 18 लोगों को गिरफ्तार किया गया था। सुनील शर्मा ने मांग की थी कि दोनों मंत्री भी तत्काल प्रभाव से अपने पद से इस्तीफा दें। उन्होंने कहा था, 'वर्तमान वित्त मंत्री और गृह मंत्री को इस जांच में यह पुष्टि करने में सक्षम होना चाहिए था कि हमने तस्करी के पीछे के मुख्य अपराधी को पकड़ लिया है या एक समय सीमा देनी चाहिए थी कि अपराधी कब तक पकड़ लिए जाएंगे। अन्यथा, जांच को और सुविधाजनक बनाने के लिए उन्हें तब तक अपने पद से हट जाना चाहिए, जब तक तस्करी के पीछे का मुख्य व्यक्ति पकड़ा नहीं जाता।

स्विमिंग पूल के लिए खुदाई कर रहे व्यक्ति को मिली अनोखी चीज

एडिनबरा। एक स्कॉटिश व्यक्ति अपने बच्चे के लिए बैकग्राउंड में स्विमिंग पूल बनाने के नकद से खुदाई कर रहा था। इस खुदाई में 44 वर्षीय पॉल मैकडॉनल्ड को जो मिला वह हैदरकर रहरान रह गए। पॉल को यहां 8,000 साल पुरानी डोल्फिन की हड्डियां मिली हैं। उन्हें वहां कुछ भी दफन होने की उम्मीद नहीं थी, लेकिन जब उन्होंने यह पाया तब समझ में आया कि 8000 साल पहले यहां पानी ही पानी रहा होगा। मैकडॉनल्ड चार बच्चों के पिता हैं। मैकडॉनल्ड्स ने कहा, मैं स्विमिंग पूल की खुदाई कर रहा था तभी मुझे कुछ असामान्य चीजें मिलीं। मैंने खोपड़ी की गोलाई देखी और फिर शूथन और दांत देखे, और मुझे तुरंत पता चल गया कि यह डोल्फिन है। डोल्फिन की हड्डियों को लगभग 31 इंच नीचे मिट्टी में संरक्षित किया गया था। पुरातत्त्वविदों का मानना है कि वे 8,000 वर्षों तक वहां दबे रहे होंगे। 10 फुट लंबे कंकाल के साथ हिरण के सींग से बना एक टूटा हुआ उपकरण था, जिसका उपयोग डोल्फिन का मांस काटने के लिए किया गया होगा। विशेषज्ञों का मानना है कि प्राचीन स्थानीय लोगों ने भोजन के रूप में डोल्फिन का आनंद लिया होगा।

तुर्किये में 5.3 तीव्रता का भूकंप आया, 23 लोग घायल

इस्तांबुल। दक्षिणी तुर्किये में गुरुवार को 5.3 तीव्रता का भूकंप आया, जिससे इमारतों को नुकसान पहुंचा और 23 लोग घायल हो गए। भूकंप का केंद्र मालटया प्रांत के येंसिलुट शहर में था और अदियामान में भी इसके झटके महसूस किए गए। दोनों प्रांत फक्वरी में आए विनाशकारी भूकंप से भी प्रभावित हुए थे, जिसमें तुर्किये और सीरिया में कम से कम 50,000 लोग मारे गए थे। तुर्किये के स्वास्थ्य मंत्री फहादिन कोका ने कहा कि मालटया और अदियामान में झटके कारण इमारतों के गिरने की आशंका से लोगों ने उनमें से बाहर छलांग लगा दी जिससे कई लोग जखमी हो गए।

हवाई में जंगलों में भीषण आग, 53 लोगों की मौत

हवाई। हवाई के माउई काउंटी में लाहना के जंगलों में भीषण आग से करीब 53 लोगों की मौत हो गई तथा हजारों लोगों को वहां से भागना पड़ा। डोरा तुफान के कारण जंगलों में लगी आग भड़क उठी जिससे कई कारें जल गईं और कई ऐतिहासिक इमारतें मलबे के ढेर में बदल गईं। रात भर आग की लपटें उठती रही जिससे जान बवाने के लिए बच्चे और व्यक्तियों को समुद्र में धुसना पड़ा। माउई काउंटी ने अघातन मृत्यु दर की घोषणा कर लिखा कि वर्तमान में मौतों पर कोई अन्य विवरण उपलब्ध नहीं है। इससे पहले अधिकारियों ने बताया था कि आग की वजह से 271 दावे क्षतिग्रस्त या नष्ट हो गए तथा दर्जनों लोग घायल हो गए। अधिकारियों ने बताया कि माउई की टीमें द्वाप के कई स्थानों पर आग पर काबू पाने की कोशिश करती रही। तटरक्षक बल ने बताया कि उसने आग की लपटें और धुएं से बचने के लिए समुद्र में कुद्रे 14 लोगों को बचाया, जिसमें दो बच्चे भी शामिल थे। अधिकारियों ने कहा कि आग की चपेट में आने से तीन लोग गंभीर रूप से झुलस गए जिन्हें ओहू द्वीप पर स्ट्राइड मेडिकल सेंटर की बर्न यूनिट में ले जाया गया। उन्होंने बताया कि कम से कम 20 मरीजों को माउई मेमोरियल मेडिकल सेंटर ले जाया गया और एक अग्निशमन कर्मी को धुएं की वजह से सांस की समस्या होने के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया। आग की वजह से कई उड़ानें रद्द होने के बाद अन्य 2,000 यात्रियों ने काहुलुई हवाई अड्डे पर शरण ली। अधिकारी हजारों विस्थापित पर्यटकों और लोगों के लिए होनोलूलू में हवाई कन्वेंशन सेंटर तैयार कर रहे थे। राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा कि उन्होंने हरसंभव मदद का आदेश दिया है। उन्होंने बताया कि हवाई नेशनल गार्ड ने आग बुझाने और खोज एवं बचाव कार्यों के लिए विनुक हेलीकॉप्टरों को तैनात किया हुआ है। बाइडन ने कहा, हमारी प्रार्थनाएं उन लोगों के साथ हैं जिन्होंने अपने घरों, व्यवसायों और समुदायों को नष्ट होते देखा है। पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा ने कहा कि हवाई से आ रही भयावह तस्वीरों को देखना कठिन है। ओबामा का जन्म हवाई में हुआ था।

श्रीलंकाई नौसेना ने घोषणा की कि कोलंबो में चीनी युद्धपोत रुका

कोलंबो। श्रीलंकाई नौसेना ने घोषणा की है कि एक चीनी युद्धपोत द्वीप राष्ट्र की 3 दिवसीय औपचारिक यात्रा पर कोलंबो बंदरगाह पर रुका है। एक बयान में नौसेना ने कहा कि चीन की आर्मी का युद्धपोत गुरुवार को कोलंबो पहुंचा। 129 मीटर लंबे जहाज पर 138 लोगों का दल सवार है और इसकी कमान कमांडर जिन शिन के पास है।



सियोल में एक महिला समुद्री तूफान खतून के कारण हो रही बारिश के बीच छाता लेकर निकलती हुई।

जी-20 शिखर सम्मेलन और भारत में चीन के राजदूत का वचन, 10 महीने बाद भी जिनपिंग नियुक्ति से क्यों कतरा रहे हैं?

बीजिंग (एजेंसी)। अक्टूबर 2022 में पूर्व राजदूत सन वेडेंगोंग के पद से हटने के बाद चीन ने भारत में करीब एक साल से राजदूत नियुक्त नहीं किया है। भारत में नए चीनी दूत को नियुक्ति में देरी सितंबर में भारत में होने वाले प्रमुख जी20 शिखर सम्मेलन से पहले और अधिक दबाव वाली हो गई है। कई पर्यवेक्षकों ने 10 महीने की लंबी देरी को असामान्य बताया है। हालांकि भारत में मौजूद चीनी दूतावास के प्रभावी राजदूत मा जिया है, लेकिन चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग अन्य देशों के लिए ऐसी कई नियुक्तियाँ करने के बावजूद भारत के लिए एक राजदूत की नियुक्ति को टालते रहे हैं। यह पहली बार है जब भारत में राजदूत का पद इतने लंबे समय तक खाली रहा है। पूर्व दूत वेडेंगोंग को अब विदाए उभ मंत्री नियुक्त किया गया है।

मोदी जिनिपिंग की ब्रिक्स समिट में हो



सकती है गुलाकात

इस बीच, चीन ने किसी दूत को नियुक्त करने या इस पद के लिए कोई नाम सुझाने में कोई तय्यारी नहीं दिखाई है। यह ध्यान देने वाली बात है कि यह नियुक्ति पहले से कहीं अधिक आवश्यक हो गई है क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच 22-24 अगस्त तक जोहान्सबर्ग में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान मुलाकात होने

की उम्मीद है। वया चीन ने किसी राजनयिक को शॉर्टलिस्ट किया है?

भारत में चीनी दूत को नियुक्ति में देरी को अभी तक स्पष्ट नहीं किया गया है, लेकिन बीजिंग सही नियुक्ति पाने के लिए अपने विकल्पों पर विचार कर रहा होगा। इस पद के लिए जिन लोगों को शॉर्टलिस्ट किया गया है उनमें हुआंग जिलियन शामिल हैं जो फिलीपींस में वर्तमान राजदूत हैं और 2019 से इस पद पर हैं और अब उनका कार्यकाल समाप्त होने वाला है। एक अन्य उम्मीदवार ऑस्ट्रेलिया में चीनी राजदूत जिओ कियान हैं। इस बीच, यह जानना महत्वपूर्ण है कि चीन के विदेश मंत्रालय में इस समय उपलब्ध-पुष्टत मंचो हुई है, क्योंकि उसने किन गैंग को विदेश मंत्री पद से बर्खास्त कर दिया है।

जितनी जल्दी हो सके नाइजर से निकलें, भारत ने अपने नागरिकों के लिए जारी की एडवाइजरी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने अफ्रीकी देश नाइजर में भारतीय नागरिकों के लिए एक एडवाइजरी जारी की। नागरिकों को जितनी जल्दी हो सके देश छोड़ने के लिए कहा गया है। मीडिया को संबोधित करते हुए विदेश मंत्रालय (एमईए) के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने कहा कि भारत सरकार नाइजर में चल रहे घटनाक्रम पर बारीकी से नजर रख रही है। मीडिया स्थिति के मद्देनजर, जिन भारतीय नागरिकों की उपस्थिति आवश्यक नहीं है, उन्हें जितनी जल्दी हो सके देश छोड़ने की सलाह दी जाती है। वे ध्यान रखें कि हवाई क्षेत्र वर्तमान में बंद है। भूमि सीमा के माध्यम से प्रस्थान करते समय, सुरक्षा और संरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अत्यधिक सावधानी बरती जा सकती है। विदेश मंत्रालय ने कहा कि जो लोग आने वाले दिनों में नाइजर की यात्रा की योजना बना रहे हैं, उन्हें भी इसी तरह पुनर्विचार करने की सलाह दी जाती है। स्थिति सामान्य होने तक उनकी यात्रा की योजना है। यह पुष्टि करने पर कि नाइजर में कितने भारतीय नागरिक हैं, मंत्री ने कहा कि वहां लगभग 250 हैं। उन्होंने आगे कहा कि हम चाहते हैं कि वे सभी पंजीकरण कराएं। हमें बताया गया है कि वे सुरक्षित हैं। हमारा दूतावास उन्हें देश छोड़ने के लिए रसद की सुविधा प्रदान करने की कोशिश कर रहा है।

पूर्व पीएम इमरान ने सऊदी अरब को किया था नाराज: शहबाज शरीफ

-प्रिंस सलमान के कहने पर मलेशिया नहीं गए इमरान

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान में जारी सियासी उत्पटक के बीच प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने पूर्व पीएम इमरान खान की सरकार पर हमला बोलकर सनसनीखेज खुलासा किया है। प्रधानमंत्री शरीफ ने पूर्व प्रधानमंत्री इमरान पर आरोप लगाकर कहा कि इमरान खान की सरकार ने अपने कार्यकाल के दौरान मित्र देशों के साथ पाकिस्तान के संबंधों को बुरी तरह से नुकसान पहुंचाया, जिसकी कीमत पिछले 16 महीने के कार्यकाल में उनकी सरकार को चुकानी पड़ी।

शरीफ ने कहा, इमरान सरकार की मित्र देशों के प्रति रवैया किसी से छिपा नहीं है। इमरान सरकार ने अरबों डॉलर के प्रोजेक्ट चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे की कार्य गति को कम किया। यहां तक इमरान खान सऊदी अरब को भी नाराज करने से बाज नहीं आ रहे थे, जबकि सऊदी अरब हर संकेत में पाकिस्तान की मदद करता है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान ने नवाज शरीफ के कार्यकाल (2013-17) के दौरान

अभूतपूर्व प्रगति देखी थी और चीन, सऊदी अरब और तुर्की जैसे देशों के साथ संबंधों में सुधार हुआ था। जबकि इमरान ने इन देशों के साथ पाकिस्तान के संबंधों को नुकसान पहुंचाया। दरअसल, सऊदी के दबदबे वाले 57 इस्लामिक देशों के संगठन ओआईसी के समानांतर एक और संगठन बनाने की कोशिश की गई थी। इसके लिए मलेशिया में तुर्की, ईरान, कतर और पाकिस्तान सहित 20 से ज्यादा मुस्लिम देश एकजुट होने वाले थे। लेकिन ऐन मौके पर सऊदी अरब के दबाव के कारण इमरान को मलेशिया दौरा रह करना पड़ा था।

एक रिपोर्ट के मुताबिक, इमरान ने सऊदी अरब के दबाव में मलेशिया दौरा रह कर दिया था। सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने पाकिस्तान के तत्कालीन पीएम इमरान खान को समन भेज बातचीत के लिए सऊदी अरब बुलाया था। जिसके बाद इमरान खान ने मलेशिया दौरा रह कर दिया था। इसके पहले इमरान ने तत्कालीन मलेशियाई प्रधानमंत्री महातिर बिन मोहम्मद के निमंत्रण पर कुआलालंपुर में होने वाली समिति में भाग लेने के लिए हामी भर दी थी।

कुदरत के कहर से बर्बाद हो गई फसलें, बाढ़ ने चीन को कर दिया कंगाल

-पहले पड़ा सूखा और अब भारी बारिश ने मचाई तबाही, ज्यादातर क्षेत्र हुए जलमग्न

बीजिंग (एजेंसी)। चीन में इन दिनों कुदरत का भीषण कहर बरप रहा है। यहां पर जलवायु परिवर्तन की वजह से पहले भयंकर सूखे और गर्मी की मार झेलनी पड़ी थी। अब चीन में भारी बारिश के कारण आई बाढ़ ने हलाकान कर रखा है। बताया जा रहा है कि यहां पर आए तूफान डोकसूरी की वजह से भीषण बारिश हो रही है। जिसके चलते बीजिंग और उसके आसपास के इलाके बाढ़ के पानी से जलमग्न हो गए हैं। बाढ़ की वजह से चीन के कई इलाकों की फसल पानी में बह गई है। जानकारी बता रहे हैं कि यहां पर अब स्थिति ऐसी बनने जा रही है कि चीन ने आने वाले दिनों में खाने के अनाज के लाले पड़ने वाले हैं। चीन का पूर्वी और उत्तरी हिस्सा काफी उपजाऊ है, लेकिन इस समय भीषण बाढ़ की वजह से सभी इलाके बाढ़ में डूबे हैं। अभी तक 10 लाख लोग विस्थापित हो चुके हैं जबकि 30 लोगों की मौत की खबर है।

यहां पर आई भीषण बाढ़ में कई लोग लापता हो गए हैं, जिन्हें तलाश जा रहा है। यहां का हेबई प्रांत बाढ़ से सबसे अधिक प्रभावित बताया जा रहा है। ये चीन



का सबसे उपजाऊ इलाकों में गिना जाता है। चीन के तीन प्रांत जो यहां के कृषि की लाइफ लाइन हैं उनमें हेबेलोंगजियांग, जिलिन और लियाओनिंग, ये सभी इलाके अभी बाढ़ में डूबे हुए हैं। यहां उगाई जाने वाली तीन प्रमुख फसलें सोयाबीन, मक्का और चावल हैं। लेकिन बाढ़ की वजह से फसलें बर्बाद हो गई हैं। जानकारी के अनुसार जिलिन प्रांत में 14 लोगों की बाढ़ से मौत हो चुकी है जबकि 18 हजार लोग विस्थापित हुए हैं। वहीं हेबेलोंगजियांग 90 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में फसल बाढ़ में बह गए हैं।

यहां पर चावल और सब्जियां पूरी तरह तबाह हो गई हैं। हेबेलोंगजियांग की राजधानी से सटे शांगजी में भी 42,575 हेक्टेयर में फसल तबाह हो गए हैं। वहीं, वुचान, जो चावल के उत्पादन के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है, वहां बाढ़ से तबाही का अभी आकलन किया जा रहा है। गौरतलब है कि पिछले साल भीषण गर्मी की वजह से फसलें बर्बाद हो चुकी हैं। अब भारी बारिश की वजह से चावल की फसल भी बर्बाद हो चुकी है। चीन के कृषि मंत्रालय ने भी कहा है कि देश का कृषि उद्योग पूरी तरह से तबाह हो चुका है।

1974 में चांद पर गया था रूस, अब 47 साल बाद फिर से दुनिया को कराना चाहता है अपनी ताकत का एहसास

ढाका (एजेंसी)। रूसी अंतरिक्ष एजेंसी रोस्कोसोस ने सोयुज 2.1बी रॉकेट पर लूना-25 लैंडर लॉन्च कर दिया। 11 अगस्त को वोस्तोचन कोस्मोड्रोम के लॉन्च पैड से इसे लॉन्च किया गया। देश ने 47 वर्षों में अपना पहला चंद्र लैंडर सफलतापूर्वक लॉन्च किया, जो उसके अंतरिक्ष कार्यक्रम में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। लूना-25 मिशन न केवल रूस की तकनीकी शक्ति का प्रमाण है, बल्कि पूर्व राजनीतिक तनाव के बीच एक रणनीतिक कदम भी है।

सफल लॉन्च

अंतरिक्ष यान ने अमूर ओब्लास्ट में

वोस्तोचन कोस्मोड्रोम से उड़ान भरी और 16 अगस्त तक चंद्र कक्षा में पहुंचने और 21-22 अगस्त को चंद्रमा की सतह पर उतरने की उम्मीद है। लूना-25 का प्राथमिक उद्देश्य चंद्रमा की चट्टान और धूल के रूप में पेश करना है। ये नमूने किसी भी संभावित आधार निर्माण से पहले चंद्र पर्यावरण को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

रूस का स्पेस में शक्ति प्रदर्शन

यह मिशन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह ऐसे समय में आया है जब रूस यूक्रेन के साथ चल रहे युद्ध के कारण गंभीर आर्थिक

चुनौतियों और अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों का सामना कर रहा है। इन बाधाओं के बावजूद, रूस का अंतरिक्ष कार्यक्रम अविचलित है। लूना-25 मिशन को पश्चिम के प्रतिबंधों के खिलाफ रूसी शक्ति के प्रतीक के रूप में पेश किया जा रहा है, जिनमें से कई ने मास्को के एयरोस्पेस क्षेत्र को लक्षित किया है। रूस और अमेरिका यूक्रेन युद्ध को लेकर आमने-सामने हैं, अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन चलाने की बात आने पर उन्होंने अपना सहयोग जारी रखा है।

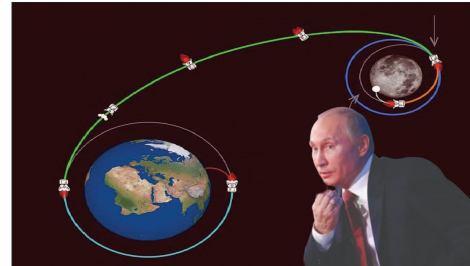
रूस का अंतरिक्ष सफर

चांद हमेशा से हमारे लिए किसी रहस्य से कम नहीं है। हमने अक्सर

किताबों में पढ़ा और सुना कि चांद पर कदम रखने वाले पहले अमेरिकी यात्री थे नील आर्मस्ट्रॉंग। 12 सितंबर, 1959 को सोवियत संघ ने लूना 2 लांच किया गया था। 1959 की मध्य रात्रि के बाद करीब 12 हजार किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चांद की सतह से टकराया था। इतनी तेज गति से टकराने के बाद लूना-2 पूरी तरह से नष्ट हो गया था।

1974 में चांद पर गया था रूस

रूस का आखिरी चांद लैंडर सोवियत संघ के जमाने में लूना-24 था। यह 18 अगस्त 1976 को चांद की



सतह पर उतरा था। इस मिशन के तहत चांद की सतह के सैपल रूस के वैज्ञानिकों को मिले थे। लूना 25 और चंद्रयान दोनों ही मिशन चांद के दक्षिणी ध्रुव पर उतरेंगे। पूरी दुनिया की इस पर

नजर है कि आखिर सबसे पहले कौन उतरेंगे। रूसी स्पेस एजेंसी ने कहा है कि दोनों ही मिशन एक दूसरे के लिए कोई दिक्कत नहीं पैदा करने वाले, क्योंकि इनके बीच एक बड़ी दूरी होगी।

भारतीय बच्चों का यौन शोषण करने वाले ब्रिटिश टीचर को हुई 12 साल की सजा

लंदन। ब्रिटेन के पूर्व प्राथमरी टीचर को भारतीय बच्चों के यौन शोषण के मामले में लंदन की एक जिला अदालत ने 12 साल की सजा सुनाई है। जानकारी के अनुसार यह मामला भारतीय बच्चों से जुड़ा हुआ है। दोषी की पहचान दक्षिण लंदन के ईस्ट इलबिच के रहने वाले मैथ्यू स्मिथ के रूप में हुई। ब्रिटेन की राष्ट्रीय अपराध एजेंसी एनपीसी का कहना है कि 35 साल के स्मिथ को पिछले साल नवंबर में अरेस्ट किया गया था। जांच के दौरान इस बात का खुलासा हुआ है कि वो 17-18 साल के भारतीय बच्चों से संपर्क करता और रुपये के एवज में इनमें 13 साल से कम उम्र के छोटे बच्चों के साथ यौन शोषण कर, उनके फोटो व वीडियो मुहैया कराने के लिए कहता था। जांच एजेंसी ने बताया कि मैथ्यू स्मिथ में पीड़ित बच्चों के प्रति कोई सहानुभूति नहीं है। उसने कम उम्र के युवकों को बच्चों के साथ दुर्यवहार के लिए मजबूर किया। दोषी शरुस ऐसे मौकों की तलाश में रहता, जिसके तहत वो भारतीय बच्चों तक अधिक से अधिक पहुंच बना सके। जांच एजेंसी ने यह भी दावा किया है कि पूर्व टीचर स्मिथ अपनी गिरफ्तारी के वक्त भी ऑनलाइन था और वो भारत में रहने वाले एक कम उम्र के बच्चे से बातचीत कर रहा था। वो इस बच्चे को मोटी रकम ऑफर कर बदले में एक अन्य छोटे बच्चे की यौन तस्वीरें भेजने के लिए कह रहा था। स्मिथ के कंप्यूटर पर डाकू वेब भी खुला था। एनपीसी की तरफ से कहा गया कि मैथ्यू स्मिथ बच्चों के लिए एक बड़ा खतरा है। यह सुनिश्चित किया गया है कि वो लंबा वकत जेल में बिताए। उसके वेट और बैंक स्टेटमेंट की जांच की गई, जिसमें पता चला कि वो भारत में रहने वाले एक किशोर को बच्चों के यौन शोषण के लिए कुल 65,398 पाउंड दे भी चुका था।

संपादकीय

आध्यात्मिक स्वतंत्रता - शारीरिक बंधनों से आजादी: संत राजिंदर सिंहजी महाराज

15 अगस्त भारत में स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है जबकि पूरे विश्व में हर देश का स्वतंत्रता दिवस इस बात का प्रतीक है कि एक देश खुद को स्वतंत्र राष्ट्र घोषित करता है। इसके साथ-साथ एक स्वतंत्रता हमारी आत्मा को आजादी और मुक्ति की ओर भी संकेत करती है। जैसे कि एक देश दूसरे देश के अधीन होता है, वैसे ही हमारी आत्मा भी दिमाग और शरीर के इस बंधनों में कैद हो चुकी है।

हममें से कई लोग खुद को केवल शरीर और दिमाग ही समझते हैं। जबकि कुछ ही लोग ऐसे हैं जो यह अनुभव करते हैं कि इस जीवन के अलावा हमारा एक आध्यात्मिक पहलू भी है जोकि हमें जान दे रहा है - और वह है हमारी आत्मा। ध्यान-अभ्यास के दौरान जब हमारी आत्मा एक पूर्ण गुरु की सहायता से इस शरीर से ऊपर उठकर उड़ान भरती है, तब वह असीम आनंद व प्रेम को महसूस करती है जोकि इस भौतिक संसार से बहुत आगे है।

संत, चिंतक और धर्म गुरु इतिहास के पन्ने से आगे उन मंडलों की खोज कर अंततः एक ही निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि हम शरीर और दिमाग से आगे भी कुछ और हैं। हम एक आत्मा हैं जोकि आध्यात्मिक मंडलों की यात्रा कर सकती है और अपने वास्तविक स्त्रोत में जाकर मिल सकती है जोकि सृष्टि-कर्ता या पिता-परमेश्वर के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने इसका अनुभव ध्यान-अभ्यास द्वारा किया। संत-महापुरुष बताते हैं कि जब हम एकांत में अपनी आँखों को बंद कर अपना ध्यान अंतर में लगाते हैं और अपनी अंदरूनी आँख से परमात्मा का अनुभव करते हैं तो वही हमारी सच्ची स्वतंत्रता है।

आत्मिक आजादी की यह यात्रा तब प्रारम्भ होती है जब हमारे अंदर की आँख व कान खुलते हैं और हम प्रभु की ज्योति व शक्ति को सुनने लग जाते हैं। इसको अनुभव करने के साथ ही हमारी आत्मा भौतिक शरीर से ऊपर उठकर अंतर के रहानी मंडलों जैसे कि पिंड, अण्ड व ब्रह्मांड को पार करती हुई पिता-परमेश्वर में लीन हो जाती है, जिसके फलस्वरूप हम परमानन्द, खुशी और दिव्य-प्रेम का अनुभव करते हैं।

हम अपने-अपने देशों में बाहरी रूप से स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं चाहे वह भारत में 15 अगस्त का आयोजन हो या फिर अन्य देशों में अलग-अलग तारीखों पर मनाया जाए। आज के दिन आओ हम आध्यात्मिक स्वतंत्रता को पाने का भी प्रयास करें। हम ध्यान-अभ्यास द्वारा ही यह पहचान सकते हैं कि हम भौतिक शरीर और बुद्धि से आगे भी अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व रखते हैं। हम आत्मा हैं जोकि परमात्मा का एक अंश हैं और वास्तव में यह प्रेम, आनंद व शांति से भरपूर है।



आज का राशीफल

मेघ	आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। उदर विचार या त्वचा के रोग से पीड़ित रहेंगे। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। गृहोपयोगी वस्तुओं में वृद्धि होगी। वाहन प्रयोग में सावधानी रखें।
वृषभ	पारिवारिक दायित्व की पूर्ति होगी। पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। रुपये पैसे के लेन देन में सावधानी रखें। मनोरंजन के अवसर प्राप्त होंगे। ससुराल पक्ष से तनाव मिलेगा।
मिथुन	जीवन साथी के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। किसी रिश्तेदार के कारण तनाव मिल सकता है। आय और व्यय में संतुलन बना कर रखें। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी।
कर्क	आर्थिक योजना फलभूत होगी। धन पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। अनावश्यक व्यय से मन अशान्त रहेगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।
सिंह	राजनीतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति होगी। व्यवसायिक व पारिवारिक योजना सफल रहेगी। जीवन साथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। प्रियजन भेंट संभव।
कन्या	संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। गृहोपयोगी वस्तुओं में वृद्धि होगी। आय के नवीन स्रोत बनेंगे। नाए अनुबन्ध प्राप्त होंगे। किसी बहुमूल्य वस्तु के पाने की अभिलाषा पूरी होगी। व्यर्थ की भागदौड़ भी रहेगी।
तुला	जीवन साथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। मनोरंजन के अवसर प्राप्त होंगे। जीविका के क्षेत्र में प्रगति होगी। आमोद-प्रमोद का सपना में वृद्धि होगी।
वृश्चिक	व्यवसायिक योजना सफल होगी। राजनीतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति होगी। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। आय और व्यय में संतुलन बना कर रखें। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी।
धनु	पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। धन पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। किसी रिश्तेदार के कारण तनाव मिल सकता है। विरोधियों का पराभव होगा। वाद विवाद की स्थिति आपके हित में न होगी।
मकर	दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा। भाग्यवश कुछ ऐसा होगा जिसका आपको लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। अनावश्यक कर्जों का सामना करना पड़ेगा।
कुम्भ	बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। जीवन साथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। शासन सत्ता से तनाव मिलेगा। व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी। मनोरंजन के अवसर प्राप्त होंगे। इश्वर के प्रति आस्था बढ़ेगी।
मीन	गृहोपयोगी वस्तुओं में वृद्धि होगी। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। कार्यक्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। खान-पान में संयम रखें। प्रणय संबंध प्रगाढ़ होंगे। वाहन प्रयोग में सावधानी अपेक्षित है।

राजनीतिक अस्थिरता के बीच गहराता आर्थिक संकट

जी. पार्थसारथी

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा रखी गई कड़ी शर्तों और सरकारी खर्च में भारी कटौती के बावजूद पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था आज रसातल में बनी हुई है। ऐसे में सतत आर्थिक विकास की गुंजाइश कम ही बचती है। मानो आर्थिक संकट ही काफी न था, महंगाई की ऊंची दर ने आम आदमी की जिंदगी को दूध बना रखा है। विश्व बैंक की हालिया रिपोर्ट में कहा गया 'अपने न्यूनतम विदेशी मुद्रा भंडार के साथ पाकिस्तान की मौजूदा अर्थव्यवस्था भारी दबाव में है, पाकिस्तानी मुद्रा का लगातार अवमूल्यन हो रहा है और महंगाई दर बहुत अधिक है। बढ़ती मुद्रास्फीति, ऊर्जा की ऊंची कीमत के बीच वर्तमान वित्त वर्ष में पाकिस्तान की आर्थिक वृद्धि दर 0.4 फीसदी अनुमानित है।' पिछले कई दशकों में कृषि आमदनी में पहली बार सिकुड़न आई है, यही हाल उद्योग जगत का है, जिससे आपूर्ति श्रृंखला में बाधा पड़ रही है। अतः पाकिस्तान पूर्व की भांति खरात पर चलने वाला मुल्क बना रहेगा, जहां तक नजर जाती है, वह विदेशी मदद पर निर्भर है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से हुए समझौते को अंतिम रूप से सिर पर चढ़ जाने और सऊदी अरब एवं संयुक्त अरब अमीरात से द्विपक्षीय सहायता मिलने के बावजूद पाकिस्तान को मौजूदा वित्तीय संकट से उबरने के लिए अपने विदेशी मुद्रा भंडार का कड़ाई से प्रबंधन करने और आर्थिक मितव्ययिता बरतने की जरूरत पड़ रही है। जहां पाकिस्तान के योजना मंत्री आसिफ इकबाल इस साल आर्थिक वृद्धि दर 3.5 फीसदी रहने का अनुमान बता रहे हैं वहीं दुनिया इस आशावादिता से सहमत नहीं है। पाकिस्तान अनिश्चितकाल के लिए अंतर्राष्ट्रीय खरात का कटोरा बना रहेगा, जिसका गुजारा विदेशी मदद बिना नहीं हो सकता। इसी बीच, पाकिस्तानी रुपये को अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा में बदलने में मददगार होने की बजाय उसके सदाबहार दोस्त चीन ने भी अपनी थैली का मुंह कस रखा है। चीन का ध्यान अधिकांशतः 'बेल्ट एंड रोड' परियोजना पर केंद्रित है। सवाल पैदा होता है कि वया पाकिस्तान श्रीलंकाई राष्ट्रपति विक्रमसिंघे की नकल कर पाएगा जिन्होंने देश के सामने मुंह बाए खड़ी दिवालिया जैसी स्थिति से उबरने में चतुर कूटनीतिक और आर्थिक नीतियों के मामले में विलक्षण सफलता हासिल की है।

पाकिस्तान अतिशक्तिशाली के लिए अंतर्राष्ट्रीय खरात का कटोरा बना रहेगा, जिसका गुजारा विदेशी मदद बिना नहीं हो सकता। इसी बीच, पाकिस्तानी रुपये को अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा में बदलने में मददगार होने की बजाय उसके सदाबहार दोस्त चीन ने भी अपनी थैली का मुंह कस रखा है। चीन का ध्यान अधिकांशतः 'बेल्ट एंड रोड' परियोजना पर केंद्रित है। सवाल पैदा होता है कि वया पाकिस्तान श्रीलंकाई राष्ट्रपति विक्रमसिंघे की नकल कर पाएगा जिन्होंने देश के सामने मुंह बाए खड़ी दिवालिया जैसी स्थिति से उबरने में चतुर कूटनीतिक और आर्थिक नीतियों के मामले में विलक्षण सफलता हासिल की है। इन आर्थिक दबावों के बीच पाकिस्तान का 'परमाणु संपन्न नेतृत्व' के पास अपनी जनता को अच्छी खबर देने के नाम पर 'परमाणु निर्वाण' की ओर कूच है। पाकिस्तान के पहले 'परमाणु बम' जनक अब्दुल कादिर खान थे, जिनकी मृत्यु अक्टूबर, 2021 में हुई। कादिर के खाते में परमाणु तकनीक में अनुसंधान एवं विकास में संलग्न यूरोपियन संबंधता वाली डच कंपनी की संदिग्ध नौकरी है, वहां हाई स्पीड सैट्राप्यूज के साथ संवर्धित यूरेनियम तैयार किया जाता था। अब्दुल कादिर 1971



में पाकिस्तान को मिली शिकस्त से काफी उर्ध्वलित थे, जिसका हवाला अवसर दिया करते थे। उन्होंने पाकिस्तानी परमाणु बम बनाने में प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो को यूरेनियम संवर्धन के अपने अनुभवों से अर्जित जानकारी की तपसील मुहैया करा दी। जल्द ही उन्हें इस्लामाबाद के निकट कदुआ स्थित पाकिस्तान यूरेनियम संवर्धन परियोजना का मुखिया बनाया गया। जहां उन्होंने यूरेनियम संवर्धन के लिए जरूरी सैट्राप्यूज अवयव जुटाकर काम को अंजाम दिया। चीन के पास चुकि संवर्धित यूरेनियम आधारित परमाणु बम बनाने की तकनीक थी, लिहाजा चीन से पाकिस्तान को देर-सवेर परमाणु अस्त्र बनाने का डिजाइन मिलना ही था। इसके बाद पाकिस्तान अपना परमाणु बना पाया, जिसका परीक्षण भारत द्वारा 1998 में पोखरण में प्लूटोनियम आधारित परमाणु परीक्षण किए जाने के फौरन बाद किया गया। यह तत्कालीन चीन के अब्दुल कादिर को ब्रह्मचार करने और भारी रकम के बदले अन्य परमाणु बम का डिजाइन मुहैया करवाने के आरोप में बेदखल कर दिया गया। बेशक कादिर पर वैश्विक परमाणु अस्त्र डिजाइन सम्मलर होने के अनेकानेक आरोप लगे हुए थे तथापि कादिर अक्टूबर, 2021 में अपनी मौत के बाद भी एक राष्ट्रीय नायक बने रहे। कहा जाता है कुछ इस्लामिक देशों की यात्रा के दौरान उन्होंने डिजाइन बेचा था। जाहिर है अमेरिका जैसे मुल्क इस कूच से खुश नहीं थे। कादिर के बाद पाकिस्तान परमाणु अस्त्र कार्यक्रम का मुखिया ले. जनरल खालिद किदवई को बनाया गया, जो कि तोपखाने के उच्च अलंकृत अधिकारी थे और 1971 की बांग्लादेश लड़ाई के बाद बतौर युद्धबंदी भारत की जेलों में रह चुके थे। उनके पाकिस्तान परमाणु प्राधिकरण का मुखिया बनने के बाद, 1998 के परमाणु परीक्षण उपरांत, पाकिस्तान के परमाणु सिद्धांत ने शवल अखिदार की। 'किदवई सिद्धांत' बताया है किन परिस्थितियों में पाकिस्तान परमाणु हथियारों का इस्तेमाल करेगा। वे लिखते हैं कि यदि भारत हमला करे और पाकिस्तान के बड़े हिस्से पर कब्जा कर लेता है या थल-वायुसेना के बड़े अंश को नेस्तनाबूद कर दे तो पाकिस्तान को परमाणु अस्त्र चलाने पर मजबूर होना पड़ेगा। एक अन्य उपाय के तौर पर, किदवई ने आगे जोड़ा कि पाकिस्तान तब भी ऐसा करेगा यदि भारत पाकिस्तान को आर्थिक रूप से तबाह करने की कोशिश करे या बड़े पैमाने पर गड़बड़ करवाकर आंतरिक अस्थिरता पैदा करने की कोशिश करे। 'किदवई सिद्धांत' आज भी पाकिस्तान की परमाणु महत्वाकांक्षा और नीतियों का चेहरा है। तीसरे देशों के संगठनों द्वारा अनुमान के मुताबिक पाकिस्तान के पास आज की तारीख में लगभग 170 परमाणु हथियार हैं जबकि भारत के पास 164 बताए जाते हैं। हालांकि इन आंकड़ों की

मुख्यमंत्री लाइली बहना योजना: सोने से महंगी पड़ रही घड़ाई

(लेखक- आनन्द पुरोहित)

मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान प्रत्यक्ष रूप से लाखों रुपए और अप्रत्यक्ष रूप से करोड़ों रुपए के खर्च के साथ भयानापूर्ण समारोह में सवा करोड़ लाइली बहनों के खाते में सिंगल विलक से करीब 1 हजार 250 करोड़ रुपये की राशि हर माह जमा कर रहे हैं। विगत दो आयोजनों की कार्यवाही पर के खर्चों का अंदाजा लगाने के बाद पहली प्रतिक्रिया सोने से महंगी घड़ाई ही निकलती है। वैसे भी इस योजना की शुरुआत के पहले ही सोशल साइट्स पर इसको ट्रोल करते मीम्स और जोक्स का सैलाब आ गया था, जिस पर यूजर ने जहां चटकारे तेते कर्ज में आकंट हूँ प्रदेश सरकार को भरपूर ट्रोल किया था कि इस तरह पैसा बांटकर जहां कौम को निकम्मा बनाया जा रहा है, वहीं इमानदार टैक्स पेयर अपने टैक्स की राजनीतिक बर्बादी देख खुद को टगा सा महसूस कर रहा है। सरकार के साथ मुख्यमंत्री को भरपूर ट्रोलिंग करते सोशल साइट्स पर कुछ ऐसे सुझाव भी आए थे कि यदि इसके बजाय गैस सिलेंडर पर पांच सौ रुपए की सब्सिडी दे दी जाए तो इससे बहना के साथ बहनोई भी खुश हो जाएंगे और पैसे का सदुपयोग दिखाई देगा। बहरहाल मुख्यमंत्री और उनकी पार्टी की सोच का यह मामला हो सकता है। यहां तो बात, शुरू हो चुकी इस योजना के इम्पलीमेंट के तौर तरीके के साथ उसके इम्पेक्ट और इफेक्ट की है, बोलें तो जिस तरह हर महीने लाखों करोड़ों खर्च कर एक जिले या संभाग की पूरी प्रशासनिक मशीनरी को... चंद सेकेंड के विलक के लिए हथको झकना पब्लिक ऑपिनियन में भी सोने से घड़ाई महंगी वाली ही बात है। सरकार योजना शर्तों के अनुसार पात्र महिलाओं को एक हजार रुपए महीना दे रही है। दस जून शनिवार को एक भव्य समारोह में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने जबलपुर के गैरिसन ग्राउंड पर बने भव्य मंच से अपनी... मनोविनोदित रैम्य वाक शैली में उपस्थितों को संबोधित करते योजना के तहत पात्र महिलाओं के खाते में इसकी पहली किश्त सिर्फ एक विलक से ट्रांसफर कर इस योजना को शुरू किया, उसके बाद, दस जुलाई सोमवार को इन्दौर में पियमपुर-इन्दौर सुपर कारिडोर पर एक भव्य समारोह में उपस्थित

तकरीबन एक लाख लाइली बहनाओं और भाजपा कार्यकर्ताओं के सामने इसकी दूसरी किश्त के लिए विलक किया तो रीवा में एस ए एफ मैदान पर तीसरी किश्त भी भव्य समारोह में गुरुवार दस अगस्त को एक विलक कर दे दी वहां भी उन्होंने अपनी मनोविनोदित रैम्य वाक शैली में ही, सबको संबोधित भी किया जबलपुर में योजना को शुरू करने के लिए हजारों लाखों महिलाओं और वीजेपी कार्यकर्ताओं के साथ आमोद गप जश्न को तो लाजिमी माना जा सकता है और इस पर के खर्च और प्रशासन के नुमाइंदों की संलिप्तता जायज कही जा सकती है वया वो तो... इनामरल फंक्शन था, परन्तु इन्दौर और रीवा में जिस तरह से सिर्फ एक विलक के लिए प्रत्यक्ष रूप में लाखों रुपए और अप्रत्यक्ष रूप से करोड़ों रुपए खर्च करते भव्य इवेंट प्रोग्राम आयोजित कर ये राशि ट्रांसफर की जा रही है, उसकी औचित्यता पर टैक्स पेयर बुद्धिजीवी वर्ग के साथ साथ आम जनता भी सवालिया निशान लगाते बढ़ती महंगाई के बीच कर रही है कि ये तो सोने से घड़ाई महंगी पड़ रही है। उन चंद सेकेंड के विलक के लिए घंटों नहीं बल्कि दिनों वह शहर अस्त व्यस्त हो जाता है जहां मुख्यमंत्री इस तरह विलक करने जाते हैं। वैसे अगर चाहे तो मुख्यमंत्री एक विलक से श्यामला हिल्स आवास में भी आराम से बैठकर ये राशि बहनों के खाते में ट्रांसफर कर सकते हैं और इसकी सूचना फ्रिट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के जरिए जन जन तक पहुंच ही जाती है। किसी को परेशानी नहीं होगी न नेता मंत्री अफसर त्रस्त होंगे न प्रशासन परत और न ही शहर तथा शहर वाले अस्त व्यस्त और कर्ज में डूबते प्रदेश की लाखों की बचत होगी वो अलग से, मतलब सोने के साथ घड़ाई फी में पड़ेगी। जबलपुर के गैरिसन ग्राउंड, इन्दौर के सुपर कारिडोर और रीवा के एस ए एफ मैदान के आयोजनों में से गैरिसन ग्राउंड का कार्यक्रम तो सभी को स्वीकार, वाजिब, लेकिन इसके बाद के दोनों आयोजन तो उस शहर के चंद लोगों को छोड़कर पूरे प्रदेश के जागरूक नागरिकों की नजर में फिजूलखर्ची ही हैं। सर्वाधिक नाराज मध्यम और



उच्च मध्यम वर्गीय टैक्स पेयर तबका है, जो इस योजना को लेकर ही अपनी नकारात्मक प्रतिक्रिया दे चुका है, उनकी चर्चा दिल्ली के चीफ मिनिस्टर अरविंद केजरीवाल की फी फोकट योजनाओं और उसकी भारतीय जनता पार्टी के नेताओं द्वारा तीखी खिलाफत के साथ शुरू होकर उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड़ा द्वारा की गई घोषणाओं के बाद उनकी पार्टी के यूपी में हथ पर खत्म होती है। बीच में चर्चा भैया/ मामा द्वारा मध्यप्रदेश में बांटे जा रहे हजार रुपए को लेकर सोशल साइट्स पर वायरल पोस्टों की भी होती है, जिसमें पत्रकार द्वारा लाभान्वित महिला से यह पूछने पर कि आप क्या करोगी इस हजार रुपए का, तो उसके द्वारा तामक से कहना दारु पियेगे शामिल रहती ही है। वैसे कई कानूनज्ञाता और सामाजिक संगठन, विभिन्न सरकारों की इस तरह की घोषणाओं और योजनाओं के खिलाफ न्यायालय का रुख भी करने का मन बना रहे हैं कुछेक तो पहुंच भी गए हैं और वे दृढ़ निश्चय कर चुके हैं कि ये फिजूलखर्ची बंद होनी चाहिए। कोर्ट की टिप्पणी तो जब आएगी तब आएगी उसके पहले ही विधानसभा चुनाव के रूप में चार माह बाद जनता की अदालत में सरकार और सरकार के इन नुमाइंदों को पेश होना ही है और उस जनता की अदालत में जज इन बहनों के साथ, गरीब, मजदूर और वाकई में जरूरतमंद, लेकिन कागजी खानापूर्ति के अभाव में इस तरह की योजनाओं से वंचित आम आदमी के साथ, वो टैक्स पेयर तबका भी होगा जो इस फिजूलखर्ची को सोने से महंगी पड़ रही घड़ाई की संज्ञा दे रहा है।

आचरण के खिलाफ विशेषाधिकार का प्रस्ताव

(लेखक- सनत जैन)

लोकसभा में अविश्वास प्रस्ताव को लेकर चर्चा खत्म हो गई है। अविश्वास प्रस्ताव सदन में गिर गया। मतदान के पहले ही विपक्ष बाहर निकल गया। लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष अधीर रंजन चौधरी ने प्रधानमंत्री पर सीधा वार किया था। उनकी तुलना धृतराष्ट्र से कर दी। संसदीय कार्य मंत्री उनके आचरण के खिलाफ विशेषाधिकार का प्रस्ताव लाए। समिति की रिपोर्ट आने तक लोकसभा अध्यक्ष ने उन्हें लोकसभा से निलंबित कर दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विपक्ष द्वारा लाए हुए प्रस्ताव पर अपनी बात रखी। संसद में सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच आरोप-प्रत्यारोप का दौर चलता रहा। जिस मकसद के साथ अविश्वास प्रस्ताव मणिपुर की घटना को लेकर लाया गया था। उस पर सत्ता पक्ष का मौन सभी को परेशान करने वाला था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मणिपुर पर कोई

बात ना करके पूर्वोत्तर राज्यों पर कांग्रेस की पिछली सरकार को घेरकर सरकार के बचाव करने की रणनीति अपनाई। लोकसभा और राज्यसभा में पिछले 4 दिनों से दिल्ली सेवा बिल और विपक्ष के अविश्वास प्रस्ताव को लेकर जो चर्चा हुई है। उससे कहीं लगा ही नहीं, कि संसद में सांसद मर्यादित ढंग से अपनी बात कर रहे हैं। दोनों ही पक्षों द्वारा एक दूसरे के ऊपर गंभीर आरोप लगाए गए। स्टैंडिंग कमेटी में दिल्ली सेवा बिल भेजने के मामले में आम आदमी पार्टी के सांसद राघव चड्ढा को नोटिस दिया गया है। सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच का जो संग्राम राज्यसभा और लोकसभा में देखने को मिला है। राज्यसभा की दो सांसद और लोकसभा का एक सांसद, सदन से निलंबित हुआ। जल्द ही उसकी परणति सड़कों पर होती हुई देखेंगी। मणिपुर में जिस तरह की हिंसा हुई है। 3 महीने से ज्यादा का समय हो गया है। हजारों लोग शरणार्थी शिविरों में रह रहे हैं। महिलाएं और

बच्चों को शरणार्थी शिविरों में भी जरूरी सामग्री नहीं मिल पा रही है। कई महीने से लोग अपनी घर के बाहर से नहीं निकल पा रहे हैं। इसके बाद भी मणिपुर की घटनाओं को लेकर जिस तरह से पक्ष और विपक्ष के बीच संसद के दोनों सदन में राजनीतिक उठापटक हुई है। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। 3 महीने से ज्यादा का समय हो गया है। स्थितियों पर नियंत्रण नहीं पाया जा सका है। मणिपुर की भयावता को देखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने स्वयं सज्ञान लेकर सुप्रीम कोर्ट ने 3 महिला जजों की कमेटी बनाई है। अन्य राज्यों से पुलिस के अधिकारी जांच के लिए मणिपुर में तैनात किए गए हैं। सुप्रीम कोर्ट की कोशिश है, मणिपुर की जनता में विश्वास कायम हो। संसद के अंदर मणिपुर मामले को लेकर पिछले 2 सप्ताह से गतिरोध बना हुआ था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सदन में आकर मणिपुर के बारे में अपने विचार रखे। विपक्ष ने अविश्वास प्रस्ताव लाकर सरकार को मजबूर किया, कि

वह मणिपुर पर सरकार अपना पक्ष रखे। अविश्वास प्रस्ताव पर भी चर्चा हो गई। प्रधानमंत्री भी अविश्वास प्रस्ताव का जवाब देने सदन में आए। मणिपुर के बारे में कोई सार्थक निष्कर्ष नहीं निकला। सरकार और विपक्ष एक दूसरे के गड़े हुए मुर्दों को उखाड़ते रहे। संसद के अंदर पक्ष और विपक्ष के बीच में नैतिकता और समस्याओं का समाधान निकलने के स्थान पर एक दूसरे के ऊपर तीखा आरोप प्रत्यारोप लगाते रहे। मणिपुर की वर्तमान घटनाओं पर सत्तापक्ष चुप रहा। मणिपुर में मतलब लगाने के स्थान पर एक दूसरे के ऊपर आरोप-प्रत्यारोप में जिस तरह की कार्यवाही संसद के अंदर हुई है। माननीय सांसदों द्वारा जिन शब्दों का प्रयोग किया है। वह सारे देश ने सुना है। जन सामान्य के बीच इसकी बड़ी तबू प्रतिष्ठा दे देखने को मिल रही है। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है। मणिपुर की घटना कोई साधारण घटनाएं नहीं हैं। हजारों नागरिक शरणार्थी शिविरों में रह

रहे हैं। दोनों समुदाय के बीच में जिस तरह से हिंसा हो रही है। पुलिस और सेना के बीच में तनाव बना हुआ है। अस्पतालों के कर्मचारी और डॉक्टर भी मेटेड और कुकी समुदाय के बीच में बंट गए हैं। इसके बाद भी सरकार और विपक्ष की ओर से समस्या का समाधान करने की सायकल पहल नहीं हुई। इसके स्थान पर जिस तरह से एक दूसरे के ऊपर आरोप और प्रत्यारोप में घटिया से घटिया शब्दों का उपयोग संसद के अंदर हुआ है। मणिपुर की वर्तमान घटनाओं को जिस तरह से नजर अंदाज किया जा रहा है। यह आश्चर्य की बात है। संवेदना, मानव अधिकार एवं मानवता को लेकर देश एवं दुनिया में भारत चर्चा का विषय बन गया है। मानसून सत्र के दौरान विपक्ष के सांसदों को राज्यसभा एवं लोकसभा से निष्कासित किया गया है। इससे भी भारतीय संसद की छवि धूमिल हुई है।



अमेजन इंडिया का 66,000 करोड़ से अधिक के निर्यात में योगदान

नई दिल्ली। ई-कॉमर्स कंपनी अमेजन इंडिया ने कहा कि उसने कुल 62 लाख सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) को डिजिटल करने के साथ आठ अरब डॉलर के निर्यात को भी सक्षम बनाया है। कंपनी ने कहा कि उसने रोजगार सृजन, निर्यात और एमएसएमई के डिजिटलीकरण के प्रमुख फोकस क्षेत्रों के लिए अपने 2025 संकल्प के तहत 20 लाख नौकरियों में से 13 लाख प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नौकरियां सृजित की हैं। उसने कहा कि अमेजन अपने वादों को पूरा करने की राह पर अग्रसर है। कंपनी ने कहा कि पिछले एक साल में उसने सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी), ई-कॉमर्स, विनिर्माण, सामग्री निर्माण और कौशल विकास जैसे उद्योगों में लगभग 1.4 लाख प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नौकरियां पैदा करने में मदद की है। वर्ष 2021 में शुरू हुआ अमेजन संभव वेंचर फंड 25 करोड़ डॉलर का कोष है जो प्रौद्योगिकी, कृषि और स्वास्थ्य सहित अन्य क्षेत्रों में स्टार्टअप पर केंद्रित है। अमेजन ने कहा कि इस कोष ने पिछले 24 महीनों में फेशटुहोम, हॉस्पिटॉक, कैशोफाई, स्मालकैस और माईलेम जैसे स्टार्टअप में निवेश किया है।

सीएमएस इंफो सिस्टम्स के प्रवर्तक ने 19.4 प्रतिशत हिस्सेदारी बेची

नई दिल्ली। सीएमएस इंफो सिस्टम्स के प्रवर्तक सायन इन्वेस्टमेंट होल्डिंग्स पीटीडी ने खुले बाजार के लेनदेन के माध्यम से कंपनी में 19.4 प्रतिशत हिस्सेदारी 1,071 करोड़ रुपये में बेच दी। आदित्य बिड़ला सन लाइफ म्यूचुअल फंड (एमएफ), आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल एमएफ, सोसाइटी जेनरल, पब्लिक सेक्टर पेंशन इन्वेस्टमेंट बोर्ड, अबू धाबी इन्वेस्टमेंट अथॉरिटी स्टेबल, नोमुरा, मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी और गोल्डमैन सैक्स शेयरों के खरीदार थे। सायन इन्वेस्टमेंट होल्डिंग्स प्राइवेट लिमिटेड, निजी इकॉनॉमिक्स ब्रैंगिंग प्राइवेट इकॉनॉमिक्स एंड सहायोगी कंपनी है। हिस्सेदारी बिक्री के बाद बीएसई सीएमएस इंफो सिस्टम्स के शेयर 6.95 प्रतिशत घटकर 364.05 रुपये पर बंद हुए। शेयरों की औसतन 357.17 रुपये की कीमत पर बेचा गया, जिससे कुल लेनदेन का आकार 1,071.51 करोड़ रुपये हो गया। इस बिक्री के बाद जून तिमाही के अंत में सीएमएस इंफो सिस्टम्स में सायन की हिस्सेदारी 46.48 प्रतिशत से घटकर 27.05 प्रतिशत रह गई।

श्रीवारी का आईपीओ 2023 में सबसे ज्यादा सब्सक्राइब हुआ

नई दिल्ली। मसला और आटा बेचने वाली कंपनी श्रीवारी स्पाइसेज एंड फूड्स का आईपीओ साल 2023 का सबसे अधिक सब्सक्राइब होने वाला आईपीओ बन गया है। कंपनी 9 करोड़ रुपये जुटाने के लिए अपना आईपीओ लेकर आई थी लेकिन इसको निवेशकों से 2,700 करोड़ की बोलियां हासिल हुईं। निवेशकों से मिली इस बेहतरीन प्रतिक्रिया से मार्केट से जुड़े लोगों को हैरानी में डाल दिया है। बता दें कि इश्यू की सब्सक्रिप्शन के अंतिम दिन 418.5 गुना सब्सक्राइब किया गया। ऑफर के लिए प्राइस बैंड 40-42 रुपये प्रति शेयर था। एनएसई के पास उपलब्ध ऑफरों के अनुसार निवेशकों ने 15.36 लाख इकॉनॉमिक्स शेयरों की पेशकश के आकार के मुकाबले 64.27 करोड़ इकॉनॉमिक्स शेयरों के लिए बोलियां लगाई हैं, जिसके परिणामस्वरूप 418.46 गुना सब्सक्रिप्शन मिला है। इससे 9 करोड़ रुपये के इश्यू को लगभग 2,700 करोड़ रुपये की बोलियां प्राप्त हुईं। इस ऑफर में खुदरा निवेशकों से अधिकतम 36.98 करोड़ इकॉनॉमिक्स शेयरों के लिए बोलियां प्राप्त हुई हैं, इसके बाद आई नेटवर्क वाले व्यक्तियों से 24.06 करोड़ शेयरों के लिए और योग्य संस्थागत खरीदारों से 3.22 करोड़ शेयरों के लिए बोलियां प्राप्त हुई हैं।



वोडाफोन आइडिया पर 2.09 लाख करोड़ का कर्ज

- कंपनी ने लोन चुकाने के लिए मांगा समय

नई दिल्ली।

कर्ज संकट का सामना कर रही टेलीकॉम ऑपरेटर वोडाफोन आइडिया ने कथित तौर पर अपने मौजूदा बकाया को चुकाने के लिए दिसंबर के अंत तक का समय मांगा है। कंपनी का कहना है कि दिसंबर तक वो बैंकों और थर्ड-पार्टी निवेशकों से कर्ज चुकाने के लिए फंड जुटा लेगी। साथ ही कंपनी ने इस बात पर भी जोर दिया है कि प्रमोटर्स वोडाफोन आइडिया को सपोर्ट करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। दूरसंचार विभाग के कारण बताओ नोटिस का जवाब देते हुए वोडाफोन आइडिया ने धन जुटाने में देरी के कारण चल

रही लिक्विडिटी चुनौतियों का हवाला दिया। डीओटी ने 21 जुलाई को नकदी संकट से जुड़ा रही कंपनी को लाइसेंस शुल्क और स्पेक्ट्रम उपयोग शुल्क के भुगतान में कमी आने के लिए एक पत्र भेजा था। 28 जुलाई को, मोबाइल सर्विस प्रोवाइडर ने वित्त वर्ष 2023 की मार्च तिमाही और वित्त वर्ष 24 की जून तिमाही के लिए एमएसएमई का भुगतान करने के लिए दिसंबर तिमाही तक का समय देने का अनुरोध किया। वीआई ने वित्त वर्ष 2023 को 2.09 लाख करोड़ रुपये के ऋण और 230 करोड़ रुपये के नकद शेष के साथ समाप्त

किया। कंपनी के ऑफिसों के मुताबिक मार्च तिमाही में बैंकों और वित्तीय संस्थानों पर उसका कर्ज 11,390 करोड़ रुपये था। इसमें से 8,380 करोड़ रुपये का भुगतान 31 मार्च 2024 तक करना है। वीआई ने कहा कि उसे आने वाले समय में फंड जुटाने की प्रक्रिया को बंद करने की उम्मीद है, जिससे वह डीओटी को बकाया भुगतान करने में सक्षम हो जाएगा। कंपनी ने बताया कि फंड जुटाने में देरी इसलिए हुई

क्योंकि मौजूदा ऋणदाताओं के साथ-साथ थर्ड पार्टी के इकॉनॉमिक्स निवेशक चाहते हैं कि वीआई के प्रमोटर पहले वादा किए गए फंड लाएं।

सोना और चांदी की कीमतों में गिरावट

नई दिल्ली।

वैश्विक बाजार में कीमती धातुओं के कमजोर होने से स्थानीय बाजार में भी सोने और चांदी की कीमतों में गिरावट के साथ कारोबार देखा गया है। सोने की कीमतों में रेकोर्ड गिरावट देखने को मिल रही है। सोना जो अभी तक 59 हजार रुपये प्रति 10 ग्राम के ऊपर चल रहा था अब 58 हजार रुपये के करीब पहुंच रहा है। चांदी की कीमतों में भी शुक्रवार को गिरावट देखी जा रही है। एमसीएक्स एक्सचेंज पर शुक्रवार की सुबह डिलीवरी वाला सोना 58800 रुपये प्रति 10 ग्राम पर खुला है। यह गुरुवार की शाम को 58853 रुपये के भाव पर

बंद हुआ था। सोना अब 58 हजार के करीब पहुंच रहा है। चांदी की कीमतों में शुक्रवार की सुबह गिरावट देखी जा रही है। एमसीएक्स पर शुक्रवार की सुबह डिलीवरी वाली चांदी का भाव गिरकर 71419 रुपये प्रति किलोग्राम पर खुला है। सोने की वैश्विक कीमतों में शुक्रवार को मिलाजुला असर देखने को मिल रहा है। कॉमिक्स पर सोने का वैश्विक वायदा भाव 3.70 डॉलर की गिरावट

के साथ 1,945.20 डॉलर प्रति औंस पर ट्रेड कर रहा है। वहीं सोने का वैश्विक हाइजर भाव बढ़त के साथ 1913.09 डॉलर प्रति औंस पर ट्रेड कर रहा है। वहीं कॉमिक्स पर चांदी का वैश्विक वायदा भाव में शुक्रवार को गिरावट देखी जा रही है। कॉमिक्स पर शुक्रवार की सुबह चांदी 0.11 डॉलर की गिरावट के साथ 22.72 डॉलर प्रति औंस पर ट्रेड करती देखी। वहीं चांदी की वैश्विक हाइजर कीमत भी गिरावट के साथ 22.67 डॉलर प्रति औंस पर ट्रेड करती देखी।

क्रेटा, अलकाजार के एडवेंचर एडिशन को लॉन्च

-ह्यूदे कंपनी का नया धमाका

नई दिल्ली।

भारतीय बाजार में हुंडई ने क्रेटा और अलकाजार के एडवेंचर एडिशन को लॉन्च कर दिया है। पेश की गई दोनों कारों में खास है। ह्यूदे अलकाजार और क्रेटा एडवेंचर एडिशन को नए रेंजर खाकी रंग में पेश किया गया है। दोनों कारों काफ़ी आकर्षक पेंट ऑप्शन और इंटीरियर डिजाइन के साथ लाई गई हैं। अन्य जगहों पर, इसमें ग्रिल, मिक्ड प्लेट्स, साइड सिल्लस, रूफ रैल्स, शाक-फिन एंटीना,

ओआरवीएम और अलॉय व्हील सहित ब्लैक-आउट कलर एलिमेंट मिलते हैं। क्रेटा और अलकाजार ब्रांडिंग के लिए डार्क क्रोम फिनिश का इस्तेमाल किया गया है। वहीं फंट फेडर में एडवेंचर लोगो दिया गया है। इंटीरियर में, हुंडई के नए एडवेंचर एडिशन मॉडल में एक ऑल-ब्लैक इंटीरियर थीम, सेज ग्रीन इंसर्ट, नई सीट अपहोल्स्ट्री, डुअल कैमरा के साथ एक डैशकैम, एडवेंचर-स्पेक मैट और मेटल पैडल मिलते हैं। क्रेटा एडवेंचर एडिशन छह रंगों

में उपलब्ध है, जिनमें एबिस ब्लैक, एटलस व्हाइट, टाइटन ग्रे और रेंजर खाकी मोनोटोन पेंट स्कीम हैं, जबकि डुअल-टोन वाले में एटलस व्हाइट और रेंजर खाकी शामिल हैं, दोनों एबिस ब्लैक रूफ के साथ हैं। वहीं अलकाजार एडवेंचर एडिशन चार मोनोटोन रंगों - एबिस ब्लैक, एटलस व्हाइट, टाइटन ग्रे और रेंजर खाकी और तीन डुअल-टोन रंगों - एटलस व्हाइट, रेंजर खाकी और टाइटन ग्रे - सभी एबिस ब्लैक रूफ के साथ पेश किया गया है। वहीं, क्रेटा एडवेंचर एडिशन में

1.5-लीटर, नैचुरली एस्पिरेटेड पेट्रोल इंजन मिलता है। इसके एसएक्स ट्रिम में छह-स्पीड मैनुअल यूनिट और एसएक्स (ओ) ट्रिम में आईवीटी गियरबॉक्स मिलता है। अलकाजार एडवेंचर एडिशन 1.5-लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन और 1.5-लीटर डीजल मिल द्वारा संचालित है, जिसे छह-स्पीड मैनुअल यूनिट, छह-स्पीड टॉक कनवर्टर ऑटोमैटिक यूनिट और सिग्नेचर(ओ) और प्लेटिनम ट्रिम में इसे सात-स्पीड डीसीटी यूनिट के साथ जोड़ा गया है।

वीवर्क दिवालिया होने की कगार पर, 85 फीसदी टूटकर जीरो पर आया शेयर

नई दिल्ली। प्लेक्सिबल वर्कस्पेस प्रोवाइडर वीवर्क इस समय दिवालिया होने की कगार पर है। रातो-रात कंपनी के शेयर 85 फीसदी टूटकर जीरो पर आ गए हैं। बताया जा रहा है कि एक दौर में 47 बिलियन डॉलर की यह कंपनी आज अपने वज्र की लड़ाई लड़ रही है। कंपनी ने खुद यह मान लिया है कि कारोबार में बने रहने की क्षमता को लेकर संदेह में है। इस बीच, न्यूयॉर्क हेडक्वार्टर वाली कंपनी वीवर्क ने अपनी दूसरी तिमाही में 397 मिलियन डॉलर का शुद्ध घाटा दर्ज किया है। हालांकि, कंपनी की ओर से बताया गया है कि उसके भारतीय कारोबार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। मिली जानकारी के अनुसार बीते मंगलवार को तिमाही नतीजों के बाद वीवर्क के शेयरों में 30 फीसदी से ज्यादा की गिरावट आई। पिछले एक साल में कंपनी के शेयरों में 95 फीसदी से ज्यादा की गिरावट आई है। सिर्फ 2023 की शुरुआत से वीवर्क का स्टॉक 85 प्रतिशत नीचे है। बुधवार को शेयर लागू एक चौथाई गिरकर 0.21 पर आ गया। बाजार विशिष्ट बतते हैं कि वीवर्क की मुसीबतें कोरोना काल में बढ़ गईं। हालांकि आईपीओ लाकर फंड जुटाने की कोशिशों को कोरोना की वजह से झटका लगा।

श्रीलंका आरसीईपी व्यापारिक संगठन में होगा शामिल: विक्रमसिंघे

कोलंबो।

राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे ने कहा कि श्रीलंका क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी (आरसीईपी) व्यापार ब्लॉक में शामिल होना चाहता है, जिसमें चीन और जापान जैसी प्रमुख अर्थव्यवस्थाएं शामिल हैं। श्रीलंका अपनी संकटग्रस्त अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण का प्रयास कर रहा है और उसे उम्मीद है कि आरसीईपी में शामिल होने से उसे लाभ मिलेगा। कोलंबो में इंडोनेशिया के दूतावास में आयोजित दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के संगठन (आसियान) की 56वीं वर्यगंड को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि श्रीलंका आसियान देशों के साथ मिलकर काम करेगा। उन्होंने कहा कि पूर्वी क्षेत्र में तेजी से हो रहे विकास को देखते हुए श्रीलंका का आर्थिक ध्यान अब उधर होना चाहिए। उन्होंने कहा कि अब जरूरत सभी क्षेत्रों में मिलकर काम करने की है ताकि उद्देश्य हासिल किया जा सके। विक्रमसिंघे ने कहा कि श्रीलंका ने आरसीईपी की क्षमता को पहचानते हुए इस विशाल व्यापार ब्लॉक में शामिल होने के लिए आवेदन किया है। श्रीलंका को आसियान सदस्य देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौते पर बातचीत शुरू करने की भी उम्मीद है। उसने पहले ही सिंगापूर के साथ एक महत्वपूर्ण व्यापार समझौता किया है और थाईलैंड के साथ सक्रिय रूप से बातचीत कर रहा है। विदेशी मुद्रा भंडार की भारी कमी के कारण श्रीलंका 2022 में भारी वित्तीय संकट की चपेट में आ गया था। विक्रमसिंघे ने कहा कि हिंद महासागर के एक रम्य के रूप में श्रीलंका इस क्षेत्र को सैन्य हस्तक्षेप से मुक्त रखने का समर्थक है।



शेयर बाजार गिरावट पर बंद

सेंसेक्स 366, निफ्टी 114 अंक गिरा

मुम्बई।

शेयर बाजार में शुक्रवार को गिरावट दर्ज की गयी। सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन दुनिया भर के बाजारों से मिल रहे कमजोर संकेतों के बीच ही बिकवाली हावी होने से बाजार नीचे आया है। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 365.53 अंक करीब 0.56 फीसदी टूटकर 65,322.65 अंक पर बंद हुआ। वहीं कारोबार के दौरान सेंसेक्स 65,727.80 तक ऊपर जाने के बाद 65,274.61 तक गिरा। दूसरी ओर पचास शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज निफ्टी भी 114.80 अंक तक गिरा और 19,428.30 अंक पर पहुंचकर बंद हुआ। कारोबार के दौरान ये 19,557.75 तक ऊपर जाने के बाद 19,412.75 तक फिसला।

आज के कारोबार के दौरान सेंसेक्स के शेयरों में से केवल सात शेयर लाभ के साथ ही ऊपर आये। एचसीएल टेक, टाइटन, पावर ग्रिड, अल्ट्राटेक सीमेंट और टाटा स्टील सबसे अधिक लाभ वाले शेयर रहे। एचसीएल के शेयर सबसे अधिक करीब 2.86 फीसदी तक उछले। इसके अलावा रिलायंस और एसबीआई के शेयर भी ऊपर आये। दूसरी ओर सेंसेक्स के शेयरों में 23 शेयर नुकसान के साथ ही नीचे आये हैं। इंडसइंड बैंक, एनटीपीसी, टेक महिंद्रा, बजाज फाइनेंस और सन फार्मा सेंसेक्स के सबसे अधिक नुकसान वाले शेयर रहे। इंडसइंड बैंक के शेयर करीब 2.18 फीसदी तक गिरे। वहीं



आज सुबह भारतीय बाजार की शुरुआत गिरावट के साथ हुई है। सेंसेक्स 117.50 अंक की गिरावट के साथ 65,570.68 के स्तर पर कारोबार कर रहा जबकि निफ्टी 35.40 अंक की गिरावट के साथ 19,507.70 के स्तर पर कारोबार कर रहा था। प्री-ओपनिंग

जियो फाइनेंसियल सर्विसेज के शेयरों की लिस्टिंग 28 को

नई दिल्ली।

रिलायंस इंडस्ट्रीज की फाइनेंसियल इकाई जियो फाइनेंसियल सर्विसेज के शेयरों की लिस्टिंग 28 अगस्त को होने वाली है। कंपनी के शेयरों का भाव 261.85 रुपये तय किया गया है। जियो फाइनेंसियल से विसेज के शेयर 10 अगस्त को शेयरहोल्डर्स के खातों में आ गए हैं। जिन निवेशकों के पास पहले से आरआईएल के शेयर थे उन्हें जियो फाइनेंसियल सर्विसेजके शेयर मुफ्त दिए गए हैं। यानि अगर किसी के पास 10 आरआईएल के शेयर थे तो उसके डिमेंट अकाउंट में अब जियो फाइनेंसियल से विसेज के 10 शेयर जुड़

गए हैं। इसके बाद ही अब शेयरों की लिस्टिंग होने वाली है। जियो फाइनेंसियल से विसेज को पहले ही निफ्टी 50 और सेंसेक्स में शामिल कर लिया गया है। जब तक इसके शेयरों की इंडिपेंडेंट लिस्टिंग नहीं हो जाती तब तक इसके शेयर भाव में कोई बदलाव नहीं होगा। 28 अगस्त को लिस्टिंग के बाद तीन दिन के भीतर इसे सभी सूचकांकों से हटा दिया जाएगा। जियो फाइनेंसियल सर्विसेज के शेयरों का भाव 261.85 रुपये तय किया गया है। पिछले महीने जुलाई 2023 में स्टॉक एक्सचेंज पर एक स्पेशल सेशन के जरिए जियो फाइनेंसियल के शेयरों का भाव डिस्कवरी किया गया था। यह भाव ब्रोकरेज के अनुमान से



ज्यादा है। ब्रोकरेज से 190 रुपये शेयर प्रारंभ करने का अंदाजा लगाया था। जबकि रिलायंस के लिए जियो फाइनेंसियल से विसेजकी एफ़िजिशन कास्ट 133 रुपये है। जियो फाइनेंसियल से विसेज के शेयरों के मौजूदा भाव के मुताबिक, इसका मार्केट केप 166 लाख करोड़ रुपये पहुंच गया है। इसी के साथ रिलायंस की यह फाइनेंसियल कंपनी देश की दूसरी सबसे बड़ी एनबीएफसी बन चुकी है।

भारत में एवोकाडो, अंगूर, ब्लूबेरी, सोना निर्यात की संभावनाएं तलाश रहा पेरू

नई दिल्ली।

भारत और पेरू के बीच मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर बातचीत बहाल करने पर सहमति के साथ दक्षिण अमेरिकी देश भारत को एवोकाडो, अंगूर, ब्लूबेरी और सोना का निर्यात करने की संभावनाएं तलाश रहा है। पेरू की उप विदेश व्यापार मंत्री टेरेसा स्टोला मेरा गोमेज ने यहां यह बात कही। उन्होंने कहा कि भारत और पेरू की तकनीकी टीमों प्रस्तावित समझौते के तौर-तरीकों और दायरे पर बातचीत शुरू करने के लिए मिलेंगी। दोनों देशों ने 2017 में एफटीए के लिए बातचीत शुरू की थी और कोविड महामारी के कारण प्रक्रिया बाधित होने से पहले अगस्त 2019 तक पांच दौर की वार्ता हुई थी। गोमेज ने कहा कि एफटीए पर फिर से बात करने जा रहे हैं। महामारी के कारण कई चीजें बदल गई हैं, इसलिए हम अतिरिक्त तौर-तरीकों की फिर से योजना बनाना चाहते हैं। जब उनसे भारत में पेरू की व्यावसायिक रुचि के क्षेत्रों के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा कि पेरू की मुख्य रुचि एवोकाडो, अंगूर और ब्लूबेरी जैसे कृषि उत्पादों और सोना, तांबा और केलियम फॉस्फेट जैसे प्राकृतिक संसाधनों के निर्यात में है। उन्होंने कहा कि भारत में बेचे जाने वाले अधिकांश ब्लूबेरी पेरू से आते हैं।

महिंद्रा साउथ अफ्रीका में शोकेस करेगी नई एसयूवी

-दुनियाभर में सुनाई देगी इसकी गूंज

नई दिल्ली।



महिंद्रा कंपनी साउथ अफ्रीका में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान अपनी नई इलेक्ट्रिक एसयूवी को शोकेस करेगी और इसकी गूंज दुनियाभर में सुनाई देगी। ये कोई आम एसयूवी नहीं होगी बल्कि ये होगी महिंद्रा थार ईवी। थार के ईवी मॉडल को लेकर लंबे समय से चर्चा थी लेकिन इसको लेकर कंपनी ने कोई भी जानकारी नहीं दी थी। लेकिन अब खबर है कि कंपनी इसका कॉन्सेप्ट मॉडल पेश करेगी। पहले से दुनिया भर में अपना परचम लहरा रही महिंद्रा थार का ईवी मॉडल भी बड़ा खास होगा और इसको लेकर कंपनी ने बड़ी तैयारी भी की है। इस कार को कंपनी ने इलेक्ट्रिक बनाने के साथ ही कई बदलाव भी किए हैं। आइये जानते हैं क्या खास बदलाव आपको इस इलेक्ट्रिक एसयूवी से देखने को मिलेंगे। थार ईवी को मार्केट में सबसे बड़ा कंपीटेशन दूसरी इलेक्ट्रिक एसयूवी की रेंज से होगा। इसके चलते कंपनी इस थार ईवी की रेंज को 500 किलोमीटर से भी ज्यादा रख सकती है। महिंद्रा की फिलहाल एक्सयूवी 400 इलेक्ट्रिक एसयूवी मार्केट में है जिसकी रेंज को लेकर कंपनी का दावा है कि ये सिंगल चार्ज में 456 किलोमीटर चलती है। हालांकि थार को ज्यादा रेंज और पावर देने होगी। थार ईवी में कंपनी चार्जिंग की परेशानी को कम करने भी जा रही है। क्योंकि ये एक एसयूवी है और आउटडोर ड्राइव इसकी ज्यादा होगी जिसके चलते कार को सुपर फास्ट चार्जिंग की जरूरत होगी। कंपनी इसको लेकर इस कॉन्सेप्ट में जानकारी दे सकती है। थार ईवी में कंपनी स्पेस का भी पूरा ध्यान रखेगी और इसमें फिलहाल मौजूद एसयूवी से ज्यादा स्पेस दी जाएगी।

हर शहर में अलग है पेट्रोल और डीजल की कीमत



नई दिल्ली।

देश में एक साल से अधिक वक से तेल की कीमतें स्थिर हैं, लेकिन राज्य स्तर पर लगने वाले टैक्स के कारण विभिन्न शहरों में पेट्रोल और डीजल की कीमतें अलग-अलग होती हैं। शुक्रवार 11 अगस्त को देश के अलग-अलग शहरों में पेट्रोल-डीजल के दाम में कुछ उतार चढ़ाव देखने को मिल रहा है। इधर अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की बात करें तो आज इसमें कुछ कमी देखी जा रही है। कच्चे तेल की कीमतों के आधार पर भारतीय तेल कंपनियों द्वारा गेज सुबह 6 बजे पेट्रोल और डीजल के लेटेस्ट रेट अपडेट किए जाते हैं। सरकारी तेल कंपनियों ने पेट्रोल डीजल के नए रेट अपडेट कर दिए गए हैं। चार महानगरों में पेट्रोल और डीजल की कीमतों में शुक्रवार को भी कोई बचलाव नहीं

किया गया है। दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये और डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर, मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये और डीजल 94.27 रुपये प्रति लीटर, कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपये और डीजल 92.76 रुपये प्रति लीटर, चेन्नई में पेट्रोल 102.63 रुपये और डीजल 94.24 रुपये प्रति लीटर, नोएडा में पेट्रोल 96.79 रुपये और डीजल 89.96 रुपये प्रति लीटर हो गया है। गाजियाबाद में 96.58 रुपये और डीजल 89.75 रुपये प्रति लीटर हो गया है। लखनऊ में पेट्रोल 96.57 रुपये और डीजल 89.76 रुपये प्रति लीटर हो गया है। पटना में पेट्रोल 107.24 रुपये और डीजल 94.04 रुपये प्रति लीटर हो गया है। पोट्टे लैयर में पेट्रोल 84.10 रुपये और डीजल 79.74 रुपये प्रति लीटर हो गया है।

एशिया कप में भी जारी रहेंगे वेस्टइंडीज दौरे जैसे प्रयोग: रोहित

-विराट को मिल सकता है आराम

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने साफ कर दिया है कि वेस्टइंडीज दौरे की तरह ही एशिया कप में भी प्रयोग जारी रहेंगे। माना जा रहा है कि खिलाड़ियों के चोटिल होने के कारण भी कप्तान के पास प्रयोग के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है। विश्वकप को अभी दो माह से भी कम समय रह गया है। तब भी टीम में हो रहे प्रयोगों से हर कोई हैरान है। वेस्टइंडीज दौरे में रोहित और अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली ने अपनी जगह पर युवाओं को अवसर दिया था हालांकि ये प्रयोग भी खास सफल नहीं रहे। विश्वकप को देखते हुए अब तक ये तय हो जाना था कि कौन सा खिलाड़ी किस स्थान पर खेलेगा पर ऐसा हो नहीं पाया है। रोहित ने एक दिन पहले ही कहा था कि अभी भी ऐसे बहुत से सवाल हैं, जिनके हमें जवाब चाहिए। साथ ही कहा कि एशिया कप में मैं

कुछ खिलाड़ियों को अच्छी टीमों के खिलाफ दबाव में बल्लेबाजी करते हुए देखा चाहता हूँ। मैं अभी भी उन चीजों को देखा चाहता हूँ, इसलिए हम इंतजार करेंगे और देखेंगे कि क्या होता है। रोहित की इसी बात ने साफ कर दिया कि टीम इंडिया की विश्व कप की तैयारी अभी भी पूरी नहीं हुई है। वेस्टइंडीज के खिलाफ एकदिवसीय सीरीज में रोहित कप्तान थे। वहीं विराट भी उस टीम में शामिल थे। इसके बाद के दोनों मैच इन्होंने नहीं खेले, इसके साथ ही पहले मैच में भी बल्लेबाजी के लिए नहीं उतरे थे। रोहित पहले एकदिवसीय में 7वें नंबर पर उतरे थे और अगले दो मैच में वह नहीं उतरे। विराट-रोहित की जगह उन खिलाड़ियों को सीरीज में अवसर दिया गया, जो लोकेश राहुल और श्रेयस अय्यर के पूरी तरह फिट नहीं होने की हालत में खेल सके हालांकि इसका भी कोई लाभ नहीं दिख रहा है। युव खिलाड़ी अपने को साबित नहीं कर पाए। सूर्यकुमार यादव

और संजु सैमसन को मध्यक्रम में मौका मिले पर दोनों ही बल्लेबाज प्रभावहीन रहे। चोटिल खिलाड़ियों के अब तक नहीं उबर पाने के कारण टीम प्रयोग के लिए मजबूर नजर आती है। कप्तान रोहित ने यह कह दिया कि एशिया कप में भी प्रयोग जारी रहेंगे। रोहित ने साफ कर दिया है कि किसी का भी चयन तय नहीं है। मेरा भी नहीं। उन्होंने माना कि कुछ खिलाड़ियों का एशिया कप में खेलना तय है पर हर खिलाड़ी को अपने स्थान को पकड़ करने के लिए प्रदर्शन करना होगा। हमें कुछ सवालों के जवाब चाहिए इसलिए दबाव भरे मुकामलों में कुछ बल्लेबाजों का खेल देना चाहिए। रोहित का इशारा साफ है, सूर्यकुमार यादव और संजु सैमसन को अपने स्थान का हस्त उंचा उठाना होगा। साथ ही शुभमन गिल भी टॉप ऑर्डर में पिछले कुछ मुकामलों से बड़ी पारी खेलने में नाकाम रहे हैं तो उन्हें भी रन बनाने होंगे। वर्ना उज्ज्वल को गुंजाइश को पूरी तरह दरकिनार नहीं किया जा



सकता है। केएल राहुल-श्रेयस अय्यर की फिटनेस ने ये सारे सवाल खड़े किए हुए हैं। इसी वजह से विश्व कप को लेकर अबतक तस्वीर साफ नहीं हुई है। इसलिए ही ये सवाल उठ रहे कि विश्व कप से पहले इतने प्रयोग कितने जायज हैं? क्या टीम को सिर्फ उन्हीं 15 को मौका नहीं देना चाहिए जो विश्व कप में खेलेंगे? क्योंकि पिछले साल टी20 विश्व कप में टीम इंडिया प्रयोग का खासियाजा उठा चुकी है।

भारतीय कुश्ती महासंघ के चुनाव पर हाईकोर्ट ने लगाई रोक, शनिवार को होनी थी वोटिंग

मांट्रियल। (एजेंसी)। भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) चुनावों के संबंध में एक बड़े घटनाक्रम में, पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय ने हरियाणा कुश्ती संघ (एचडब्ल्यूएफ) द्वारा दायर एक याचिका के बाद शनिवार (12 अगस्त) को होने वाले मतदान पर रोक लगा दी है। यह रोक अगले आदेश तक है। हरियाणा कुश्ती संघ ने हरियाणा एमेच्योर कुश्ती संघ (एचडब्ल्यूएफ) को डब्ल्यूएफआई चुनावों में वोट डालने की अनुमति देने के कदम को चुनौती देते हुए अव्यवस्था का दावाजा खटखटाया। एचडब्ल्यूएफ का नेतृत्व संसद सदस्य दीपेंद्र हुज्जा करते हैं और यह आधिकारिक तौर पर डब्ल्यूएफआई और हरियाणा ओलंपिक एसोसिएशन (एचओए) से संबद्ध है। डब्ल्यूएफआई के नियमों के मुताबिक, एक राज्य संघ अपने चुनाव में वोट डालने के लिए दो सदस्यों को भेज सकता है। लेकिन हरियाणा एमेच्योर कुश्ती संघ ने भी दावा किया है कि उनका डब्ल्यूएफआई से जुड़ाव है और उन्हें

एशिया कप और विश्वकप में बांग्लादेश की कप्तानी करेंगे शाकिब

नई दिल्ली। बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) ने एशिया कप और एकदिवसीय विश्वकप क्रिकेट टूर्नामेंट के लिए अ-रुभवी अल्लरउडर शाकिब अल हसन को टीम का कप्तान बनाया है। शाकिब दूसरी बार टीम के कप्तान बने हैं क्योंकि हाल ही में चोटिल होने के बाद एकदिवसीय टीम के कप्तान तमीम इस्कबाल ने पद छोड़ दिया था। बीसीबी अध्यक्ष नजमुल हसन ने शाकिब के नाम की घोषणा कर कहा कि शाकिब एशिया कप और विश्व कप के लिए बांग्लादेश की एकदिवसीय टीम के कप्तान होंगे। उन्होंने शुक्रवार को अपने घर पर कहा, हमने शाकिब को एशिया कप और विश्व कप के लिए कप्तान बनाया है। वहीं विश्व कप और एशिया कप के लिए टीम की घोषणा कल की जाएगी। अब तक केवल ऑस्ट्रेलिया ने ही विश्वकप के लिए अपनी टीम घोषित की है। ऐसे में अगर विश्व कप के लिए बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड अपनी टीम की घोषणा करता है तो बांग्लादेश पहली ऐसी दूसरी टीम होगी, जो इस मल्टीनेशनल टूर्नामेंट के लिए अपनी टीम घोषित करेगा।



शाकिब अल हसन को एशिया कप और विश्व कप के लिए कप्तान बनाया है।

फीडे विश्व कप शतरंज - विदित और अर्जुन नें प्री क्वाटर फाइनल में बनाई जगह



बाकू, अजरबैजान। फीडे विश्व कप शतरंज में चौथे दौर के दो पारसिकल मुकामलों के बाद भारत के विदित गुजराती और अर्जुन परिगसी ने सीधे शीर्ष 16 में अपना स्थान तय कर लिया है जबकि प्रतियोगिता में भारत के शीर्ष खिलाड़ी डी गुंकेश, प्रज्ञानन्दा और निहाल सरिन कल टाईब्रेक के मुकामले खेलेंगे जबकि महिला वर्ग में कोनेरु हम्पी और हरिका द्रोणावली क्वाटर फाइनल में जगह बनाने के लिए कल टाईब्रेक खेलेंगी। पुरुष वर्ग में चौथे दौर के पहले मुकामले में जीत दर्ज करने वाले विदित गुजराती ने दूसरे दिन काले मोहरों से खेलते हुए फ्रांस के एटीने ब्रेकोट के खिलाफ ड्रॉ खेलते हुए जीत के लिए जरूरी आधा अंक बना लिया और इसके साथ ही लगातार दूसरे विश्व कप में वह शीर्ष 16 में पहुंच गए हैं। वहीं कल जीत के करीब जाकर चुकने वाले अर्जुन परिगसी ने आज एक शानदार एंडगेम में उज्बेकिस्तान के जवोहर सिदारोव को मात देते हुए विदित की तरह 1.5-0.5 के स्कोर से पांचवें दौर में स्थान बनाया। भारत के शीर्ष विश्व नंबर 9 खिलाड़ी डी गुंकेश ने रूस के आन्द्रे एसीपको से, प्रज्ञानन्दा ने विश्व नंबर दो युएसए के हिकारु नाकामुरा से और निहाल सरिन ने रूस के यान नेपोमनिशी से लगातार दूसरा मुकामला ड्रॉ खेला और 1-1 से बराबर रहे और अब टाईब्रेक का सामना करेंगे। महिला वर्ग में भारत की शीर्ष खिलाड़ी कोनेरु हम्पी को जॉर्जिया की बेला खोटनाश्विली से कल हार का सामना करना पड़ा था पर आज उन्होंने शानदार वापसी करते हुए स्कोर बराबर कर दिया तो हरिका द्रोणावली ने फ्रांस की एलिने रोएफर्स से लगातार दूसरा ड्रॉ खेला और अब इन्हें टाईब्रेक का सामना करना होगा।

पारालुएलो के गोल से स्पेन महिला विश्व कप के सेमीफाइनल में



वेलिंगटन। सलमा पारालुएलो के अतिरिक्त समय में किये गये गोल की मदद से छठी रैंकिंग पर काबिज स्पेन ने शुक्रवार को यहां नीदरलैंड को 2-1 से हराकर पहली बार महिला विश्व कप के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। दो यूरोपीय मजबूत टीमों के बीच कड़े नॉकआउट मुकामले में पारालुएलो ने 11 वें मिनट में विजयी गोल दागा। नीदरलैंड की टीम चार साल पहले फ्रांस में फाइनल में अमेरिका से हार गयी थी और अब दोनों टीमों टूर्नामेंट से बाहर हो चुकी हैं। मारियोना काल्डेटी ने 81वें मिनट में गोल कर स्पेन को 1-0 से बढ़त दिलायी। नियमित समय के अंतिम 10 मिनट में नीदरलैंड की डिफेंडर स्टेफानी वान डर ग्रूप्ट 'खलायिका' से 'नायिका' बन गयीं जिन्होंने अपनी टीम के लिए बराबरी गोल दागा। उनकी हैंडबॉल की वजह से ही स्पेन को 81वें मिनट में पेंल्टी मिली थी जिस पर मारियोना ने गोल दागा था। फिर 19 वर्षीय पारालुएलो ने अतिरिक्त समय में बायें पैर से मुश्किल कोण से लगे शॉट से टीम के लिए विजयी गोल किया। उन्होंने कहा, 'यह हम सभी के लिए महत्वपूर्ण है। हम सफल रहे। हम अंत तक लड़ते रहे। हमें धरोसा था।' इस मैच के लिए दर्शकों की संख्या 32,000 से ऊपर थी जिसमें न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस हिथिकिन्स और फीफा अध्यक्ष जिज्यानी इन्फेन्टिनो भी शामिल थे।

विश्व कप 2023 के लिए चिन्नास्वामी स्टेडियम में तेजी से चल रही तैयारियां



बेंगलुरु (एजेंसी)। इसी साल अक्टूबर-नवंबर में होने वाले एकदिवसीय विश्वकप को देखते हुए यहां के चिन्नास्वामी स्टेडियम में जोर जोर से तैयारियां चल रही हैं। कर्नाटक राज्य क्रिकेट संघ (केएससीए) ने स्टेडियम में सुधार (नवीनीकरण) का जरूरी कार्य शुरू कर दिया है। विश्व कप के दौरान इस स्टेडियम में पांच मैच खेले जाएंगे। केएससीए अध्यक्ष रघुराम घट ने केएससीए महाराजा टी20 टूर्नामेंट के अनावरण अवसर पर कहा, 'कुछ दिन पहले आईसीसी की टीम के निरीक्षण के बाद हमने नवीनीकरण का कार शुरू कर दिया है। जिसके तहत स्टेड का नवीनीकरण, कुछ नई सीट लगाना और स्टेडियम में शौचालय का नवीनीकरण भी शामिल है। उन्होंने कहा, 'हमारा मुख्य लक्ष्य स्टेडियम में बेहतरीन सुविधाओं को उपलब्ध कराना है जिससे की सभी लोगों को खेल देखने का आनंद मिल सके। गौरतलब है कि विश्व कप के दौरान बेंगलुरु में ऑस्ट्रेलिया और पाकिस्तान के बीच 20 अक्टूबर, इंग्लैंड और श्रीलंका के बीच 26 अक्टूबर, न्यूजीलैंड और पाकिस्तान के बीच चार नवंबर, न्यूजीलैंड और श्रीलंका के बीच नौ नवंबर और भारत व नीदरलैंड नीदरलैंड के बीच 12 नवंबर को मैच खेले जाएंगे। कर्नाटक में देश की कई टीमों में अभी अभ्यास कर रहे हैं इसके साथ ही कुछ इंग्लिश काउंटी टीम भी बेंगलुरु में ट्रेनिंग चाहती हैं। इसी को देखते हुए केएससीए राज्य में कुछ और स्टेडियम बनाएगा। वहीं केएससीए के उपाध्यक्ष संपत कुमार ने कहा कि केएससीए के 13 आगस्त से शुरू हो रहे टी20 टूर्नामेंट पर बीसीसीआई की घुंघराल रोधी इकाई की नजर रहेगी।

इस कारण विश्वकप के लिए संभावितों की घोषणा नहीं कर पा रहा बीसीसीआई

मुम्बई (एजेंसी)। अक्टूबर-नवंबर में होने वाले एकदिवसीय विश्वकप क्रिकेट टूर्नामेंट के लिए आईसीसी ने पांच सितंबर तक संभावित टीम की घोषणा करने को कहा है। अब तक केवल ऑस्ट्रेलिया ने ही विश्वकप के लिए अपनी टीम घोषित की है। वहीं भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) कब टीम घोषित करता है ये देखना होगा। बीसीसीआई के सामने सबसे बड़ी परेशानी खिलाड़ियों का चोटिल होना है। अभी श्रेयस अय्यर और लोकेश राहुल सहित कई टीम इंडिया के कुछ खिलाड़ी चोटिल हैं। विश्वकप की शुरुआत 5 अक्टूबर से होगी। इसका पहला मुकामला गत चैंपियन इंग्लैंड और न्यूजीलैंड के बीच अहमदाबाद में होगा। विश्वकप में खेला जाएगा। वहीं खिताबी मुकामला 19 नवंबर को इसी मैदान खेला जाएगा। आईसीसी की समयसीमा के अनुसार सभी टीमों को 5 सितंबर तक अपनी-अपनी टीमों की सूची आईसीसी को देनी होगी। हालांकि टीमों 27 सितंबर तक इनमें बदलाव कर सकती हैं। सभी टीमों को अपने दल में 15-15 खिलाड़ी रखने की अनुमति होगी। 5 सितंबर से 27 सितंबर तक टीमों को बिना किसी मंजूरी के दल में बदलाव करने की इजाजत होगी, मगर अगर इसके बाद टीमों को दल में कोई बदलाव करने होंगे तो उसके लिए आईसीसी की अनुमति लेनी होगी। टीम इंडिय के मुख्य तेज गेंदबाज जसप्रीत



बुमराह आयरलैंड के खिलाफ टी20 सीरीज से वापसी कर रहे हैं। इस सीरीज के दौरान उनकी फिटनेस और उनके प्रदर्शन को देखा जाएगा। वहीं राहुल और अय्यर भी अभी रिहैब के दौर से गुजर रहे हैं। अगर वे फिट होते हैं तो उसके बाद टीम घोषित कर दी जाएगी। वहीं अगर इनमें से कोई भी खिलाड़ी 5 सितंबर से पहले पूरी तरह से फिट नहीं होता तो उसके लिए विकल्प तलाशने होंगे। यह भी कहा जा रहा है कि बीसीसीआई ने विश्व कप 2023 के लिए 18-19 खिलाड़ियों का चयन किया है पर अंत में इनमें से केवल 15 खिलाड़ियों को ही रखा जाएगा। विश्व कप 2023 से पहले भारतीय टीम एशिया कप के अलावा ऑस्ट्रेलिया से एकदिवसीय सीरीज भी खेलेगी। ऐसे में इन दोनों ही सीरीजों के बाद ये साफ हो जाएगा कि किन 15 खिलाड़ियों को वर्ल्ड कप स्टांड में जगह देनी होगी। ये भी तय है कि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एकदिवसीय सीरीज में उतरी टीम ही विश्वकप के लिए उतरेगी।

'मुश्किल लक्ष्य', विश्व कप में खेलने पर केन विलियमसन का बड़ा बयान आया सामने

क्राइस्टचर्च। केन विलियमसन ने शुक्रवार को स्वीकार किया कि भारत में होने वाले आईसीसी विश्व कप 2023 में उनके खेलने की संभावनायें काफी कम हैं क्योंकि न्यूजीलैंड का यह बल्लेबाज सर्जरी से अब भी उबरने की प्रक्रिया में चल रहा है। विलियमसन के घुटने के 'एंटीरियर क्रुसिएट लिगामेंट' (एसीएल) की इस साल अप्रैल में सर्जरी हुई थी। उन्हें इंडियन प्रीमियर लीग 2023 के शुरुआती मैच में गुजरात टाइटन्स की ओर से अहमदाबाद में वेनई सुपर किंग्स के खिलाफ खेलते हुए यह चोट लगी थी। विलियमसन ने कहा, 'विश्व कप में खेलना हमेशा ही विषय होता है। इसे (चोट को) ठीक होने में कितना समय लगेगा या मैं किस दिन वापसी करूंगा, यह इस समय बस अटकलबाजी ही है।' उन्होंने कहा, 'हां, निश्चित रूप से संभावना काफी कम है लेकिन फिर यह लक्ष्य काफी मुश्किल है। पर विश्व कप जैसा टूर्नामेंट हमेशा आपको प्रेरित करता है।'

रोहित ने बताया, विराट के टी20 सीरीज से बाहर रहने का कारण



नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने वेस्टइंडीज के खिलाफ जारी टी20 सीरीज में उनके और अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली को बाहर रखे जाने का कारण बताया है। रोहित के अनुसार ये कदम घोट से बचने के लिए किया था। रोहित ने कहा, पिछले साल भी हमने यही किया था। तब टी20 विश्वकप के कारण हमने एकदिवसीय क्रिकेट नहीं खेला। वहीं हम अब कर रहे हैं। एकदिवसीय विश्वकप को देखते हुए ही हम टी20 क्रिकेट नहीं खेल रहे हैं। साथ ही कहा कि आप सब कुछ खेलकर विश्व कप के लिए तैयार नहीं रह सकते। हमने दो साल पहले यह फैसला लिया था। ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा भी इसी कारण टी20 से बाहर रखे गये हैं। रोहित ने माना कि एकदिवसीय विश्व कप से पहले टीम को नंबर चार बल्लेबाज का चयन करने में परेशानी हो रही है। उन्होंने कहा कि चोटों के कारण उन्हें काफी परेशानी हो रही है। उन्होंने कहा, टैक्सा, नंबर 4 हमारे लिए पहले से परेशानी रहा है। गौरतलब है कि साल 2019 एकदिवसीय विश्व कप के बाद से ही भारतीय टीम ने चौथे नंबर पर 11 से अधिक खिलाड़ियों को आगमनाया है पर केवल श्रेयस अय्यर और ऋषभ पंत ही 10 से अधिक पायियां खेल पाये हैं। ऋषभ का हारदसे के कारण अभी तक पूरी तरह से फिट नहीं हो पाये हैं। इस कारण वह विश्व कप से बाहर हो गए हैं। वहीं श्रेयस अय्यर पीठ की सर्जरी के बाद से ही वापसी नहीं कर पाये हैं। उन्होंने नंबर 4 पर लगातार अच्छा प्रदर्शन करने के लिए श्रेयस अय्यर को सराहा।

खेल मंत्रालय ने पहलवानों को रोमानिया भेजा, एशियाई खेलों से पहले होगा विशेष ट्रेनिंग शिविर

नई दिल्ली (एजेंसी)। नई दिल्ली - एशियाई खेलों की टीम में शामिल छह पहलवान खेल मंत्रालय की राष्ट्रीय खेल महासंघ (एनएसएफ) को सहायता देने की योजना के अंतर्गत विशेष ट्रेनिंग शिविर और प्रतियोगिता के लिए तीन सहयोगी स्टाफ सदस्यों के साथ रोमानिया के लिए रवाना हुए। शुक्रवार को जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार इस दौरे के दौरान टीम 18 से 20 अगस्त तक इयोन कोनिव्नु और लाडिस्लाऊ सिमोन टूर्नामेंट में हिस्सा लेगी। विज्ञप्ति के अनुसार यह अंतरराष्ट्रीय दौरा 15 दिन का होगा जिसमें टीम की ट्रेनिंग का पूरा खर्चा, टिकट और व्हाइव के व्यय, वीजा का खर्च और 'आउट ऑफ पॉकेट' भत्ते का पूरा खर्चा उठाना जाएगा। एशियाई खेल 23 सितंबर से आठ अक्टूबर तक चीन के हांगझो में आयोजित होंगे। रोमानिया दौर पर प्रीको रोमन पहलवान : ज्ञानेंद्र (60 किग्रा), नीरज (67 किग्रा), विकास (77 किग्रा - खेलते इंडिया एथलीट), सुनील कुमार (87 किग्रा - टॉपस एथलीट), नरिंदर चौमा (97 किग्रा - खेलते इंडिया एथलीट) और नवीन (130 किग्रा)।



टीम के लिए एकदिवसीय विश्वकप जीतना चाहते हैं बोल्ट

वेलिंगटन (एजेंसी)। न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाज ट्रेट बोल्ट ने कहा है कि उनकी टीम इस बार भारत में होने वाले एकदिवसीय विश्वकप को जीतनी। बोल्ट को केन्द्रीय अनुबंध नहीं होने के बाद भी इंग्लैंड दौरे के लिए टीम में रखा गया है। उससे तय है कि उन्हें विश्वकप के लिए भी टीम में जगह मिलेगी। इस तेज गेंदबाज ने कहा कि टीम में वापसी के साथ ही एकदिवसीय विश्व कप के लिए प्रयास करने में लिए अहम रहेगा। साथ ही कहा कि पिछले आयोजनों में हमारा अनुभव बेहद रोमांचक रहा है। इसलिए मैं टीम के साथ जुड़ने और बड़ी भूमिका निभाने के लिए उत्साहित हूँ। उम्मीद है कि इस बार हम टॉपी जीतने में सफल रहेंगे। बोल्ट ने गत वर्ष न्यूजीलैंड क्रिकेट के केन्द्रीय अनुबंध को तोड़कर टी20 क्रिकेट लीग खेलने का फैसला किया था। वह कई अवसरों पर फेंचइजी लीग प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के लिए न्यूजीलैंड की टीम से भी बाहर रहे हैं। बोल्ट ने फेंचइजी क्रिकेट खेलने के अपने फैसले पर कहा था कि एक साल पहले न्यूजीलैंड क्रिकेट से दूर जाना आसान फैसला नहीं था। मैं अभी नहीं चाहता था कि न्यूजीलैंड और फेंचइजी क्रिकेट के बीच के चयन हो। मैं केवल इतना जानता था कि मेरा करियर कितना लंबा रहेगा और एक गेंदबाज के रूप में अपने बचे हुए समय का अधिकतम लाभ उठाना चाहता था। मैं निश्चित रूप से अब भी पहले की तरह अपने देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए उत्साहित हूँ। उम्मीद है कि अगले कुछ महीनों में अच्छा प्रदर्शन करूंगा। बोल्ट ने कहा कि मैं अब भी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट का बहुत सम्मान करता हूँ। यह क्रिकेट खेलने का सपना देखने वाले किसी भी बच्चे के लिए बेहद अहम है और मेरी राय में एकदिवसीय विश्व कप अभी भी क्रिकेट का शीर्ष है। उन्होंने कहा कि जब मैंने अपने अनुबंध से हटने का निर्णय लिया, तो यह घर पर थोड़ा अधिक समय बिताने के लिए था। मैं जल्द ही दुनिया भर में बहुत अधिक क्रिकेट खेलने में समय बिताने लूंगा।

एशिया कप में पाकिस्तान का ये खिलाड़ी बढ़ाएगा भारत की मुश्किल, भारतीय बल्लेबाजों को रहना होगा सतर्क

नई दिल्ली (एजेंसी)। एशिया कप 2023 के आगाज में बस कुछ ही दिन शेष हैं। इसके लिए पाकिस्तान टीम ने अपनी टीम का ऐलान कर दिया है। इस टीम में कई शानदार तेज गेंदबाज हैं। जो अकेले दम पर विपक्षी टीम की बैटिंग को तहत-नहस कर सकता है। इनमें शाहीन शाह अफरिदी मौजूद समय में 'द हंड्रेड' में शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। जिसके बाद कहा जा रहा है कि वो एशिया कप में भारतीय बल्लेबाजों को परेशान कर सकते हैं। सितंबर को श्रीलंका के कैंडी में खेला लेकिन पाक टीम में शाहीन से बड़ा खिलाड़ी

मुकामलों पर एक नजर डालें तो नई गेंद से शाहीन अफरिदी और नसीम शाह भारतीय टीम की मुश्किल बढ़ा सकते हैं। पिछले साल टी20 वर्ल्ड कप में भारत के खिलाफ हारिस रउफ ने बेहतरीन गेंदबाजी की थी। उस समय उन्होंने रोहित शर्मा और सूर्यकुमार यादव को आउट किया था। जिस कारण इस बार भारतीय बल्लेबाजों को हारिस से परा पाना भी मुश्किल होगा। भारतीय बल्लेबाजों को हारिस से पाना पाना मुश्किल



हारिस रउफ बेहद ही चालाकी से बल्लेबाजों को अपना शिकार बनाते हैं। द हंड्रेड में हारिस ने 20 गेंद में 20 रन देकर 2 विकेट झटकें। रउफ ने फॉर्निक्स के लिए दो बल्लेबाजों को पवेलियन भेजा। लेकिन एक बल्लेबाज का काम रफ्तार से ही खत्म कर दिया तो एक को बड़ी चालाकी से अपने जाल में फंसाया। इसी कारण से हारिस एशिया कप में टीम इंडिया के लिए बड़ा खतरा बन कर उभरेगा।

